Fortnightly per copy Rs. 12/- only

ओ३म्

3rd October 2016

आर्य  जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

उरी का बदला
आतंकवादियों के ठिकाने ध्वंस
भारत सरकार की कार्यवाही का पूर्ण समर्थन
अभी तो एल.ओ.सी.
पाकिस्तान नहीं बदलेगा तो आगे बहुत कुछ हो सकता है

RAIDS BEGAN AT ZERO DARK THIRTY

1 The commandos stealthily **crossed the LoC around 12.30am**, avoiding Pak army posts. The attack was **planned for a virtually moonless night**

2 The strikes began around **2.30am and lasted till about 4.30am**. The men were back home before sunrise

Special Forces Used: Around 200 para commandos of the 4 Para SF & 9 Para SF units trekked 8-13 km to and fro in hilly, thickly-forested terrain. Camps were at altitudes ranging from 2,000-6,000 feet

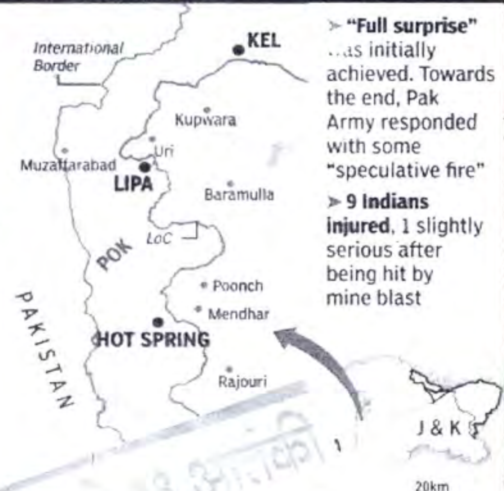
7 Terror Launchpads Destroyed: Two launchpads were destroyed by heavy artillery fire while the commandos attacked 5. At least 2 of the 7 pads reported some Pak army presence

1.5KM TO 6.5KM ACROSS THE LOC

➢ The soldiers went up to 6.5km across the LoC. **Helicopters were on standby** for emergency evacuation, but were finally not used. UAVs were used to recce the area

➢ Commandos were told to **come back safely and leave no comrade behind**

➢ Pakistan army denies raids, says heavy exchange of fire on LoC in **Bhimber, Hot Spring, Kel and Lipa sectors**



➢ **"Full surprise"** ...as initially achieved. Towards the end, Pak Army responded with some "speculative fire"

➢ **9 Indians injured**, 1 slightly serious after being hit by mine blast

Specific and credible information that some terrorist uni... had positioned themselves...to carry out... terror...

—**Lt General Ranbir Singh** (DGMO) in the **first joint p... Army and MEA since the Kargil conflict in 199...**

...monitored ...rrikar, Army ...Q in Delhi

पठानकोट और उरी में आतंकवादियों के माध्यम से पाकिस्तान ने भारत में दहशत फैलाने का जो काम कर रहा है उसे तुरंत बंद करना ही होगा वरना इतिहास में नई तारीख लिखी जाएगी । इस बात की सारी दुनिया बखूबी जानती है कि हिंसा और आतंकवाद किसी भी समस्या का समाधान नहीं है पर जो इस भाषा के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानते उनका देश रहेगा या मिटेगा यह उनकी नियति तय करेगी । लेकिन वहां की आम जनता अगर खुशहाली चाहती है तो जनता को वहाँ के हुक्मरानों पर दबाव डालना पडेगा साथ ही साथ सैनिक प्रशासकों को भी मजबूर करना पडेगा कि खून खराबे से कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता अतः शांति बहाली से ही सुख समृद्धि हासिल हो सकती है पाकिस्तान की आम जनता गरीबि से जूझ रहीं है अतः कश्मीर के सपने छोड़कर अपनी देश की जनता पर ध्यान दे ।

अपना जन्मचरित्र

(दयानन्द सरस्वती)

योग-शिक्षा और योग-साधनों में मैंने छः वर्ष बिताए थे लेकिन आगे दूसरे और योग-सिद्ध महापुरुषों और तपस्वियों के सत्संग लाभ के लिए मेरे अन्दर प्रबल आग्रह हुआ। आभू पर्वत के साधुओं ने मुझे हरिद्वार में होने वाले कुम्भ मेले में सम्मिलित होने के लिए परामर्श दिया था। वह मेला वैशाख संवत् १९१२ मे होने वाला था[३२२]। मैं हरिद्वार जाने के लिए तैयार होने लगा। मुझे विदाई देने के दिन आबू-पर्वत के परिचित साधु-सज्जन-पूजारी लोग लगभग सभी मुझसे मिले। उनमें विमलशाह जैन मन्दिर के दो साधु, पंगुतीर्थ, अग्नितीर्थ, पिंडारक तीर्थ, मृगु आश्रम, रामकुण्ड, नागतीर्थ, अचलगढ़, यज्ञेश्वर आदि स्थानों के साधु-पूजारी-तपस्वी लोग सम्मिलित थे।

मैंने सभी से कृतज्ञतापूर्ण भाव से विदाई लेकर मारवाड़, अजमेर, जयपुर, अलवर, दिल्ली और मेरठ आदि होते हुए पैदल हरिद्वार की यात्रा की थी। रास्ता लगभग सत्तर योजन का था[३२३]। मैं प्रतिदिन कम से कम पाँच योजन रास्ता अतिक्रम करता था[३२४]। अति सवेरे उठकर यात्रा करता था। तालाब मिलने पर स्नानादि और संध्या, उपासना, प्राणायामादि कर लेता था और बड़े-बड़े वृक्षों के नीचे रात्रि को आश्रय लेता था। हाट-बाजारों में या गाँव में या रास्ते में किसी न किसी व्यक्ति से खाने की वस्तुएँ मिल जाती थीं। मैं खाने के योग्य वस्तुएँ ले लेता था और शेष गरीब दुखियों को दे देता था[३२५]। सन्यासी का वेष देखकर गाँवों के ार हाट-बाजारों के रहने वाले लोग कठिन रोगों की औषधि के लिए या सुख-दुःख जानने के लिए मुझे घेर लेते थे। वाध्य होकर मैं आत्मरक्षा के लिए मौन धारण कर लेता था। दिन हो या रात हो, निर्ज्जन स्थानों में ही मैं विश्राम करता था।

इसी रूप से मैं पुष्कर पहुंच गया था। वहाँ योग-सिद्ध पुरुषों के बारे में सन्धान करने लगा। पुष्कर तीर्थ पंचतीर्थों में से एक है और पंच सरोवरों में से भी क है। पंचतीर्थ ये हैं-पुष्कर, कुरुक्षेत्र, गया, गंगा और प्रभास। पंचसरोवर ये है-मान-सरोवर, पुष्कर-सरोवर, बिन्दु-सरोवर, नारायण-सरोवर और पम्पा-सरोवर। पुष्कर तीर्थ में पुष्कर-सरोवर तीन हैं-ज्येष्ठ, मध्यम और कनिष्ठ। ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीनों क्रमानुसार इनके देवता कहे जाते हैं। पुष्कर को छोड़कर अन्यत्र ब्रह्मा का मन्दिर मिलना कठिन है। ज्येष्ठ पुष्कर सरोवर से थोड़ी दूर पर प्रधान मन्दिर ब्रह्मा का ही है।

पुष्कर में मैं सिद्ध-योगियों के विषय में अनुसन्धान करने लगा था। किसी जटिया बाबा के परामर्शानुसार नागपर्वत की गुफाओं में ढूंढते हुए मैंने भर्तृ हरि गुफा में एक मौनी बाबा को देखा। तातचीत नहीं हो सकी। उन्होंने अतिशीघ्र वहाँ से मुझको हटने के लिए निषेधात्मक संकेत किया। मैंने गुफा से बाहर आने पर देखा कि दो बृहदाकार अजगर सर्प मौनी बाबा की संकीर्ण गुफा के अन्दर धीरे-धीरे प्रवेश कर रहे हैं। गुफा से बाहर एक पहाड़ी भील ने कहा कि वह दोनों अजगर मौनी बाबा के साथ ही उस गुफा में रहा करते हैं। वहाँ किसी दूसरी पर्वत की चोटी पर एक साधु ने मुझे कहा कि "तुम्हारा मनोरथ पुष्कर में पूर्ण नहीं होगा। हरिद्वार के कुम्भ-मेले में शत-सहस्त्र साधु-योगी-तपस्वी हिमालय से नीचे उतर आएंगे। उन्हीं में से किसी के संग में रहते हुए हिमालय-भ्रमण करना ही अच्छा है। हिमालय के कन्दरों में साठ हजार से भी अधिक साधु-योगी-तस्वी रहते हैं। तिब्बत तक में भी ये लोग रहते हैं। मानसरोवर और ल्हासा तक भी भ्रमण करना चाहिए। वहाँ हजारों साधु योगी तपस्वी लोगों के दर्शन मिलते हैं।" साधु जी की इस बात को शिरोधार्य करके मैं पुष्कर छोड़कर हरिद्वार की ओर बढ़ने लगा। पुनः अजमेर आकर एक नांगा बाबा के साथ मैं तारागढ़ नाम के गिरि-दुर्ग पर पहुंचा। वहाँ से अजमेर नगर की शोभा बहुत ही सुन्दर मालूम होती है। वहाँ किसी साधु तपस्वी से भेंट होने की आशा नहीं थी। अनासागर के तट पर यज्ञ करते हुए ८-१० साधुओं को मैंने देखा था। ये लोग सबके सब गांजा पीते थे और अग्नि में घृत की आहुतियाँ ते थे। वहाँ से नांगा बाबा मुझे 'ढाई दिन के झोपड़ेन में ले आये थे। मैंने उक्त स्थान को हिन्दू या बौद्ध भजनालय के रूप में देखा था, लेकिन अब वहाँ मुसलमानों का भजन स्थान बन गया है, ऐसा देखा। भारत के अन्तिम सम्राट् पृथ्वीराज, जयचनद्र, संयोगिता-स्वयंवर और शाहबुद्दीन गौरी के बारे में नांगा बाबा ने बहुत सी कहानियां सुनाते-सुनाते मुझे जयपुर होकर दिल्ली जाने की सड़क दिखा दी।

स्वदेश और स्वधर्म की रक्षा के लिए व्यापक आन्दोलन

अजमेर के अनुभव-पुष्कर-अजमेर आने-जाने के समय मुझे कुछ नये अनुभव प्राप्त हुये थे। रास्ते में मन्दिरों में, बाजारों में, दुकानों में, नहाने के घाटों में, अतिथिशालाओं में-सर्वत्र स्वदेश की और स्वधर्म की रक्षा के लिये आन्दोलन और आलोचना व्यापक रूप से चल रही थी[३२६]। धनी-गरीब, ज्ञानी-मूर्ख, वृद्ध-नवजवान, स्त्री-पुरुष सभी के मुखों से यही सुनाई देता था कि विदेशी पादरियों द्वारा ईसाई धर्म के व्यापक प्रचार और प्रलोभन से स्वधर्म की रक्षा करनी चाहिये, विदेशी राहु के ग्रास से स्वदेश की रक्षा करनी चाहिये। इन सब चर्चा और आंदोलन से मालूम होने लगा था कि विदेशी और विधर्मियों की सर्वग्रासी कूटनीतियों से बचने के लिये जनसाधारण कोई रास्ता ढूंढ़ रहे थे। विदेशियों और विधर्म के प्रति भय औरर घृणा के भाव का धीरे-धीरे विस्तार हो रहा था[३२७]।

मारवाड़ के अनुभव-अजमेर आने से पहले मारवाड़से भी अनुभव मिला था कि जनता स्वदेश और स्वधर्म की रक्षा और पुनरुद्धार के लिये किसी शक्तिशाली और धार्मिक राजा को ढूंढ़ रही थी। उपयुक्त नेता और संचालक मिलने से वह युद्ध करने के लिए तैयार थी। उसका विश्वास कि ईसाई-राज और ईसाई-धर्म से बचने के लिये हिन्दू और मुसलमान एक साथ मिलकर युद्ध करने के लिये तैयार हो जायेंगे और समय आने पर प्राण भी दे देंगे।

जयपुर के अनुभव -पुष्कर से जयपुर आकर वहां मैंने गलतातीर्थ, गालव ऋषि की

तपोभूमि, सूर्यमन्दिर और मुसलमान बादशाह के आक्रमण से बचाने के लिये वृन्दावन से लाई गई गोविन्दजी की मूर्ति के मन्दिर में योगी, तपस्वी और साधकों का अनुसन्धान किया था । यहाँ का गोविन्दजी का मन्दिर प्रसिद्ध है । कहते हैं कि वल्लभाचार्य को यमुना किनारे एक मूर्ति मिली थीं, जिसकी प्रतिष्ठा वृन्दावन में की गई थी । मुसलमान बादशाह औरंगजेव के आक्रमण से बचाने के लिए यह मूर्ति और गोविन्ददेव की मूर्ति वृन्दावन से जयपुर लाई गई थी । प्राचीन राजधानी और राजस्थान की अम्बर नगरी से पूर्व गलता टीला है । उसमें गालव ऋषि की तपोभूमि में एक साधु रहते थे । योग-साधना के बारे में मैंने उनसे उपदेश करने की प्रार्थना की थी जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया था क्योंकि मैं उनकी तन्त्र साधन-प्रणाली को स्वीकार करने में असमर्थ था । फिर मैं जयपुर से दिल्ली प्रस्थित हो गया ।

इस प्रकार दिल्ली के दूसरे ही वातावरण में मैं पहुंच गया । ज्ञात हुआ कि दिल्ली नगरी महासमाधि में निमग्न है । एक ब्रह्मचारी ने मुझे पृथ्वीराज का लालकोट दिखाया । वह अब धूल में रंजित है । योगमाया मन्दिर देखा[३२९] । पृथ्वीराज इसी साधन भूमि में बैठे हुये योग-साधन सीखते थे । उसी के एकांश में आज बुतखाना है । मुसलमानों ने इसका नाम बुतखाना अर्थात् पौत्तलिक भजनालय रखा है । इसके समीप लगभग डेढ़ हजार वर्षो का पुराना धातु-स्तम्भ है । सुना जाता है कि राजा धब ने इसको बनवाया था । पृथ्वीराज के द्वारा निर्मित कुतुव स्तम्भ देखा । असम्पूर्ण स्तम्भ के निर्माण कार्य को कुतुबुद्दीन ने पूरा किया था । सिलिए इसका नाम कुतुबमीनार पड़ा[३२९]। वहां से दिल्ली के पुराने किले को देखा । यह ही प्राचीन इन्द्रप्रस्थ है । यहाँ युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ का प्राचीन गौरव चिन्ह है । यहाँ किसी साधु का दर्शन नहीं मिला था । लेकिन यमुना के किनारे कई एक साधुओं से भेंट हुई थी । य लोग भी हरिद्वार के मेले में जाने वाले थे । अतः मैं भी इनमें सम्मिलित हो गया था ।

दिल्ली में नया अनुभव-अजमेर, मारवाड़, जयपुर और अलवर सभी स्थानों में जनसाधारण के अन्दर प्रवल रूप से चांचल्य का अनुभव हुआ । दिल्ली में इस चांचल्य का अनुभव अत्यन्त अधिक हुआ था । मार्ग में, बाजारों में, दूकानों में, पथचारी यात्रियों में, साधु-संन्यासियों में, धनी-गरीबों में या राज-कर्मचारियों में मुख्य रूप से केवल एक ही चर्चा चल रही थी कि अव सहन करना कठिन है । अब तो जीवनों की बाजी लगाकर भी स्वदेश और स्वधर्म का उद्धार करना चाहिये । हम दस साधु यमुना के किनारे सारे दिन के बाद भोजन कर रहे थे । उसी समय एक छोटे से लड़के ने हम सबकी ओर संकेत करके अपनी माता जी से कहा-"माता जी, हमारा देश और धर्म विदेशी ईसाई-अंगरेज और ईसाई-पादरियों के अत्याचारों और शैतानी के कारण डूब रहा है और हमारे देश के ऐसे लाखों साधु बाबाब केवल पेट पूजा में ही व्यस्त हैं । देश और धर्म की रक्षा के बारे में ये लोग कुछ परवाह नहीं करते हैं । इनके लिये पेट ही भगवान है और भगवान ही पेट है ।" लड़के के इन वाक्यों को सुनकर साधु एक साथ मिलकर लड़के को अभिशाप देने लगे और गाली-गलौच करने लगे । लड़के की माता साधुओं के अभिशाप के कारण भायभीत होकर रोने लगी । मैंने लड़के की माता से विनम्र भाव से कहा-"माताजी ! लड़के की बातें सम्पूर्ण सच्ची हैं । आपका लड़का देवदूत-सा मालूम पड़ता है । कम से कम इस लड़के की बातों से मेरी आंखें तो बिल्कुल खुल गयीं हैं । लड़के का पैतृक परिचय लेने से मालूम हुआ कि उस समय से लगभग ३८ वर्ष पहले इस लड़के के पितामह अलीगढ़ के जमींदार साहसी वीर योद्धा दयाराम हाथरस किले की रक्षा करने के लिये लार्ड हेस्टिंग्स के अविराम गोलावर्षण के सम्मुख युद्ध करके वीरगति के प्राप्त हुये थे । मैंने लड़के के सिर पर हाथ रख के आशीर्वाद दिया । लड़का भी खुशी के मारे रोने लगा था ।

मैं अपने साथी साधुओं के साथ लाल किले के सम्मुख बैठा हुआ हरिद्वार जाने के लिये सोच रहा था । तभी अचानक एक साधु आकर कहने लगा-"आप लोग जाइये, हरिद्वार जाकर स्नान कर शुद्ध बन जाइये । हमारी पवित्र मातृभूमि को विदेशी राहु ने ग्रास कर लिया, धीरे-धीरे हमारे देश की सुख-शांति, शिक्षा-सभ्यता, धर्म-संस्कृति, सम्पद्-ऐश्वर्य को भी यह हजम करने लगा है, हमारे धर्म को ग्रास करके विधर्मी पादरी हमारे सहज सरल देशवासियों पर ईसामसीह के धर्म को लाद रहे हैं । हमारे स्वधर्मी भाई-बहनों को विधर्मी बना के देश-द्रोही के रूप में बदल देते हैं । स्वदेश को विदेशियों के पंजे से मुक्त करना जितना कठिन है उससे हजारों गुणा कठिन है विधर्म के पंजे से स्वधर्मियों को मुक्त करना । जब तक स्वदेश और स्वधर्म पर राहु और केतु का ग्रास रहेगा, तब तक हम गंगा-स्नान से शुद्ध होने में विश्वास नहीं करते हैं ।"

इस साधु से मेरी एकान्त में बहुत समय तक बातचीत हुई थी । मेरे मुख से अनुकूल बातचीत सुनकर वह साधु बहुत ही प्रसन्न हुआ । आगे जाके मालूम पड़ा कि आप एक मराठी पण्डित साधु के वेश में घूम रहे हैं और इस रूप के लगभग एक सौ पण्डित साधुओं के वेश में घूम-घूमकर साधुओं में नई प्रेरणा लाने की कोशिश कर रहे हैं[३३०]। मैं पूर्व निश्चयानुसार अपने साथी साधुओं के साथ हरिद्वार की ओर प्रस्थित हो गया । निश्चय हुआ कि हम लोग मेरठ होते हुए हरिद्वार जाएंगे । हम लोग जैसे-जैसे आगे बढ़ते गए वैसे-वैसे ही हरिद्वार जाने वाले यात्री हमारे साथ अधिक संख्या में जुटते गए थे जो स्वदेश और स्वधर्म के उद्धार के लिए व्यग्र और उत्सुक मालूम पड़ रहे थे ।

हरिद्वार कुम्भ मेले के यात्री हम सब साधु लोग यथा समय दिल्ली से मेरठ पहुंच गए । तीर्थयात्रियों के अन्दर सैकड़ों गृहस्थ स्त्री-पुरुष भी थे । (मेरठ से लगभग चार योजन की दूरी पर पांडवों की प्राचीन राजधानी हस्तिनापुर है । गंगा नदी वहाँ से धीरे-धीरे हटती जा रही है ।) वहाँ से हम गढ़ मुक्तेश्वर गए थे, जहाँ मन्दिरों की संख्या बहुत है । लगभग सौ-शती स्तम्भों के ध्वंसावशेष वहाँ उपस्थित हैं । मेरठ के पास ही परशुराम की जन्मभूमि और जमदग्नि का आश्रम है । ऋषि वाल्मीकि का आश्रम भी वहाँ ही था । वहां के पुराने आश्रमों में योग-सिद्ध पुरुषों का सन्धान नहीं मिला ।

हम में से वहुतों को पता लगा कि इन तीर्थयात्रियों के अन्दर बहुत से सरकारी कर्मचारी और बनावटी वेश वाले राजकर्मचारी गुप्त रूप से रहते हैं । सीधे-साधे यात्रियों को इस बात का पता नहीं था । सरल यात्रियों के अन्दर गुप्तचर राजकर्मचारी अंग्रेज वणिक्-शासन के बारे में प्रसंग शुरू कर देते थे । तीर्थयात्रियों के पीछे-पीछे कभी-कभी घुड़-सवार श्वेतांग सैनिक भी तीर्थयात्रियों की रक्षा के वहाने से आते थे । तीर्तयात्रियों के अन्दर कभी-कभी अंग्रेज वइमक्-शासकों के अनाचार, अत्याचार और स्वैराचारों के बारे में तरह-तरह की चर्चायें चलती थीं । गुप्तचर लोग ही

दिन देखा गया-क व्यक्ति को सरकारी कर्मचारियों ने पकड़ लिया । ?उसकी पत्नी एक छोटे शिशु को गोदी में लिए हुए उस गोरे सरकारी कर्मचारी के पैरों पर गिर पड़ी । लेकिन श्वेतांग कर्मचारी ने शिशु को माता की गोद से छीनकर ले लिया और गंगा की तीव्र धारा में फेंक दिया । पुत्र-शोक के कारण करुण-कन्दन करती हुई माता गंगा में कूद पड़ी । पिता भी गंगा में कूदने के लिए तैयार हो गया । लेकिन दो सिपाहियों ने बन्दूकों के हत्थों से उसको मारते-मारते अचेत कर दिया। गोद का शिशु-पुत्र और शिशु की माता गंगा में बहती हुई कहाँ चली गयी- भगवान् ही जानते हैं । सरकारी कर्मचारी के पीछे बन्दूकधारी पलटन बहुत संख्या में थी । गृहस्थ तीर्थयात्री चारों तरफ भाग गए थे । अंग्रेजी शासन और प्रजा-पालन के बारे में मेरे जीवन में यह पहला प्रत्यक्ष अनुभव था । हम सब साधु लोग दलबद्ध न रहकर चार-चार पाँच-पाँच के समूहों में रहकर हरिद्वार की ओर चलने लगे । हम सब साधुओं के मस्तिष्क में यह चिन्ता बहुत प्रबल और क्रियाशील हो रही थी कि "दुःखिनी, पराधीन भारत-माता की सेवा में हमको आयुष्काल और शक्ति के अनुसार कुछ न कुछ अंश समर्पित कर देना चाहिए ।"

किन्तु गुप्तचर कर्मचारियों के सन्देह करने के भय के मारे कोई भी साधु किसी साधु से बातचीत करना निरापद नहीं समझता था । इस प्रकार की घटनाओं को और इन सबका प्रतिविधान सोचते हुए हम सब तीर्थयात्री विभिन्न दलों में विभक्त होकर हरिद्वार की ओर यात्रा में व्यस्त थे । कभी-कभी हम सब पुराने जान-पहचान के साधु लोग किसी-किसी निरापद स्थान पर एकत्र हो जाते थे और देश की दुर्दशा पर विचार करते थे ।

देश की इन स्थितियों को देखते हुए, गेरुवे कपड़े पहनकर, अपनी-अपनी मुक्ति और पारमार्थिक कल्याण के लिए देश भर में घूमना बहुत ही लज्जाकर और ग्लानिकर मालूम होने लगा । लेकिन देशवासी जन-समुदाय को सचेत और संगठित कैसे किया जाए-यह विचार मस्तिष्क में आने लगा ।

वेल्लोर विद्रोह- दक्षिण भारत के किसी वृद्ध साधु ने कहा कि गवर्नर जनरल कार्नवालिस के बाद के अस्थायी रूप के दो-एक वर्ष बाद ही उसी पद पर स्थायी रूप से जार्ज बार्लो आये थे । लग भग पचास वर्ष पूर्व की बातें हैं[३३१]। देशी सैन्य पर कैसे-कैसे अत्याचार होते थे और आज भी होते हैं, वे वर्णनातीत हैं । मद्रास के गवर्नर उस समय लार्ड बैंटिंक थे । उन्हीं की अनुमति लेकर सेनापति जन्फैडक ने फौजी पोशाक के बारे में अचानक आदेश जारी कर दिया था-

"सब फौजों को कम्पनी की दी हुई नयी टोपी पहननी पड़ेगी । (उस टोपी का ऊपर का भाग गाय के चमड़े से ओर नीचे का भाग सूअर के चमड़े से बना हुआ था ।) सभी को दाढ़ी और मूंछ सफा कर देने पड़ेंगे; कोई कपाल में तिलक, चन्दन, भस्मादि की छाप नहीं लगा सकेगा, सिर पर कोई चोटी नहीं रख सकेगा, कोई हिन्दू या मुसलमान विश्राम के निर्दिष्ट समय के अतिरिक्त सन्ध्या, उपासना या नमाज के लिये अन्य समय नहीं दे सकेगा, गले में कोई जनेऊ या माला नहीं पहन सकेगा और विश्राम के समय के अतिरिक्त किसी अन्य समय में भगवान् या खुदा ताला का नाम उच्चारण नहीं कर सकेगा ।"

इस आदेश से लगभग सब ही हिन्दू और मुसलमान सिपाहियों के अन्दर जाति और धर्म के ऊपर आघात होने के कारण विक्षोभ पैदा हो गया था ।

सर्वप्रथम इस अन्याय और दर्म-विघातक आदेश के विरोध में वेल्लोर के सिपाहियों ने विद्रोह की घोषणा की थी । उन लोगों ने उस आदेश का पालन करने से इन्कार कर दिया था । इन सिपाहियों को सामरिक कानून के अनुसार फौजी नियम-श्रृंखला तोड़ने के अपराध के कारण गोलियों से मृत्यु-दण्ड दिया जाये-ऐसी राय दी गई थी । साथ ही साथ देशी सिपाहियों ने ११३ अंग्रेज फौजियों को और दो सामरिक कर्मचारियों को थोड़े समय के अन्दर ही गोलियों से मार दिया था । उन विद्रोहियों का गोरे सैनिक बल द्वारा दमन करना कठिन था । अतः आर्काट से विशाल सैन्य वाहिनी बुलवा कर अमानुषिक रूप से विद्रोह का दमन किया गया था ।

विद्रोहियों को हथकड़ी औ बेड़ी लगवाकर दो दिन भूखा और नंगा रखा गया था । तीसरे दिन विद्रोही सैन्यों के नेताओं के जीवित शरीर से चमड़ी निकालकर उन चर्महीन मृत देहों को ठेला०गाड़ी पर रखकर सैन्यावास में जुलूस निकाला गया था । मृत अपराधियों के अन्दर हिन्दू और मुसलमान दोनों ही थे । इस रूप से वेल्लोर का विद्रोह दमन किया गया था । इसके बाद ही बैंटिंक और फ्रेड्रिक को स्वदेश जाने का आदेश मिल गया था । हमारे तीर्थ-यात्रियों के अन्द्र वेल्लोर विद्रोह के बारे में सुनाने वाले व्यक्ति के मामा दण्डप्राप्त फौजी नेताओं के अन्दर सम्मिलित थे ।

बैरकपुर-विद्रोह- नदिया के एक वद्ध साधु ने कहा कि वेल्लोर जैसी एक घटना आज से लगभग तीस वर्ष पहले बगाल के बैरकपुर में भी घटी थी[३३२]। वहां के सैन्यावास में सैनिकों को झट ब्रह्मदेश में युद्ध करने के लिए आदेश मिला था । इससे उनके अन्दर विक्षोभ पैदा हुआ । उनको मासिक वेतन भी बहुत ही कम दिया जाता था । इसके उपरान्त समुद्र पार होके विदेश जाने से उके खाद्याखाद्य का विभेद नहीं रहेगा और वे लोग धर्म-भ्रष्ट और जाति-भ्रष्ट हो जायेंगे, घर से भी ये लोग निकाले जायेंगे । सिपाही लोगों में सम्मिलित रूप से लगभग दो सौ फौजियों ने सरकार से प्रार्थना की "हम सब लोग जाति रक्षा, धर्म रक्षा, आचार-रक्षा के लिए ही समुद्र के उस पार ब्रह्मदेश में युद्ध के लिये नहीं जाना चाहते हैं । हमारे प्रति वहाँ जाने के लिए जो आदेश दिया गया है, उसको निरस्त कर दिया जाए ।"

बैरकपुर से कलकत्ता केवल दो योजन की दूरी पर है । वहाँ सामरिक ढंग से उत्तर आ गया था । तदनुसार सैन्यावास के अन्दर कुचकावाच के मैदान में सभी प्रार्थनाकारियों को बेड़ी और हथकड़ी लगवा कर खड़े करके एक साथ गोरे सैन्यों से गोलियों से मरवा दिया गया था और उनके शव देहों को सप्ताह भर गंगा नदी के तीर पर प्रदर्शनी के रूप में रखा गया जहाँ मांस-भक्षी पशु-पक्षियों ने शवों के मांस को खा लिया, शेष रह गए सैकड़ों कंकाल । उस कंकाल राशि को गंगा नदी में फेंक दिया गया । मृत व्यक्तियों के बन्धु-बान्धव लोग दूर-दूर से शवों को देखने के लिये आते थे । मृत, गलित, खंड-खंड मांस-राशियों के अन्दर से अपने आदिमियों को पहचानना असम्भव था । सन्ध्या से पहले ही जनता को गंगा किनारे से हटाने के लिये गोरे सैन्य लोग घोड़े पर सवार होके आते थे । जनता हटने में देर करती तो बन्धु-बान्धवों के शोक के कारण रोती हुई जनता पर वे बन्दूकों से गोलियां छोड़ते थे । इन गोलियों से बहुत संख्या में पुरुष, स्त्री, शिशु और पथिक भी घायल होकर मर जाते थे ।

सौ वर्षों का शासन- सारे देश भर में विदेशी शासन का हाल सुनते हुए हम सब कुम्भ मेले के यात्रीगण धीरे-धीरे हरिद्वार की ओर अग्रसर होने लगे और पूरे देश का हाल

सभी की ज्ञान-दृष्टि के सम्मुख आने लगा कि कोई सुखी नहीं है, सभी अंग्रेज-शासन से दुःखी हैं-यह मालूम होने लगा। जनसाधारण के इन दुःखों के कारण एक नहीं बहुत हैं। सौ वर्षों के अन्दर देश की धर्म-नीति, सामरिक-नीति, अर्थ-नीति, शासन-नाति और राजनीति उलट गई है। विभिन्न प्रकार की दुर्नीतियों ने समाज के शरीर को पंगु और असार कर दिया है।

प्रजा-विद्रोह का आभास-आबू शैल-शिखर से हरिद्वार तक पैदल जाते समय विभिन्न स्थानों के सैकड़ों आबाल-वृद्ध, नर-नारियों से वार्तालाप करने का मुझे अवसर मिला था। ज्ञात होता था कि जनसाधारण प्रजा के अन्दर स्वदेश और स्वधर्म की रक्षा करने के लिये प्रबल प्रचेष्टा हो रही है। सौ वर्ष पहले के ''प्लासी के युद्ध'' का बदला लेने के लिए लगभग सभी तैयार हो रहे थे। इनमें धनी-निर्धन, राजा-प्रजा, सरकारी-गैरसरकारी, साधु-संन्यासी एवं भिखमंगे-कंगाल तक सब कोई सम्मिलित थे। जान देने के लिए भी सैकड़ों पुरुष तैयार हो गये थे।

गुप्त समितियों की स्थापना- लगभग सभी शहरों में गुप्त समितियाँ स्थापित की गई थीं। गुप्त प्रचार-कार्य और संगठन भी चालू हो गये थे। मन्दिरों और मस्जिदों में गुप्त परामर्शों के कार्य सुचारु रूप से चलते थे। मुख्य-मुख्य व्यक्तियों के घरों में नियमानुसार कार्य-केन्द्र स्थापित हो गए थे। क्रान्तिकारी नेतागण मध्य रात्रियों में आलोचनार्थ सवेत होते थे। मुख्य-मुख्य समाचारों को मुख्य-मुख्य स्थानों पर भेजने के लिए गुप्त प्रवाहक दौड़ा करते थे। क्रान्तिकारी लोगों में आपस में वार्तालाप के लिए सांकेतिक और गुप्त भाषाओं का प्रयोग होता था। गुप्त समितियों के कवियों के रचित स्वदेश और स्वधर्म-भक्ति मूलक संगीतों के द्वारा भिक-मंगे लोग भीख मांगते थे। वीर पुरुषों की जीवनियों की कहानियाँ कविताकार से प्रचारित होती थीं। हाट-बाजारों में प्रचार-पत्रों और प्राचीर-पत्रों का वितरण होता था[३३३]।

क्रान्ति की अग्नि शिखा- देश भर में इस प्रकार की गम्भीर स्थिति और वातावरण देखने से आभास होता था कि अति निकट भविष्य में ही किसी न किसी समय क्रान्ति की अग्निशिखा प्रबल और व्यापक रूप से प्रज्वलित हो जाएगी। प्रजा-विद्रोह के होमानल से सब प्रकार के अन्याय, अधर्म, अत्याचारों के पूंजीभूत सभी जंजाल एक साथ ही जलकर अत्यल्प समय के अन्दर ही स्वाहा हो जायेंगे। अंग्रेज सरकार को यह सब मालूम होने पर भी केवल बन्दूकों के बल पर ही इस स्थिति की उपेक्षा की गई थी।

हरिद्वार में

जन्म-चरित्र

संवत् १९११ के वर्ष के अन्त में हरिद्वार के कुम्भ के मेले में आके[३३४] बहुत साधु सन्यासियों से मिला और जब तक मेला रहा तब तक चण्डी के पहाड़ के जंगल में[३३५] योगाभ्यास करता रहा।

पूना-प्रवचन

हरिद्वार गया। वहां उस समय कुम्भ का मेला भरा हुआ था।

कलकत्ता-कथ्य

आबू पर्वत से आये हुए हम सब साधु-संन्यासी यथासमय हरिद्वार में पहुंच गए थे। हमारे साथ रास्ते में जितने गृहस्थ यात्री आये थे, हमने उन सब ही को अलग कर दिया था। मैंने स्वयं को भी सब सन्यासियों से अलग कर लिया था। कुम्भ-स्नान की तिथि से बहुत दिन पहले ही तीर्थ यात्री लोग सैकड़ों, हजारों और लाखों में आने लगे। हरिद्वार आना था। हम कुम्भ-स्नान से बहुत पहले ही हरिद्वार पहुंच गये थे। निश्चित रूप से सब ही जगह घूम-घूमके सब कुछ अनुभव कर लिया था। सिद्ध योगी साधकों का अनुसन्धान करना ही मेरा मुख्य कार्य था।

आशय-हिमालय के चारों धाम- केदार, बदरी, गंगोत्तरी और यमुनोत्तरी जाने के रास्ते हरिद्वार से ही आरम्भ होते हैं। हरिद्वार में पाँच महातीर्थ हैं- गंगाद्वार, कुशावर्त, विल्वकेश्वर, नील पर्वत और कनखल। योग-साधना और योगियों की संगत में रहना-इन दोनों कार्यों के लिये मैंने नील पर्वत को चुन लिया था। तीर्थयात्रियों की भीड़-भीड़ वहाँ बहुत कम रहती है। यह स्थान लगभग एक कोश की चढ़ाई पर है, इसलिये यह स्थान दुर्गम ही है। हम यहाँ अधिकांश समय साधना में ही बिताते थे। अवशिष्ट समय योगियों की संगत में एवं साधना के अनुशीलन में लग जाता था। बाहर के दर्शनार्थी हमारे खाने के लिये जो कुछ भेज देते थे उससे मेरा भरण-पोषण हो जाता था। किसी दिन यदि कुछ भी नहीं मिला तो उस दिन केवल पानी पीकर ही रह जाता था। यह आदत मुझे बहुत पहले से ही पड़ गई थी।

क्रान्तिकारी नेताओं का आगमन-नील पर्वत पर मैंने बहाँ के चण्डीस्थान के सन्यासी रुद्रानन्द से सुना था कि भारत-व्यापी प्रजा-जागरण और विप्लवप्रचेष्टा के और भविष्यत् कान्ति-युद्ध के नायक, नेता और कर्णधार लोग अतिशीघ्र साधु-संन्यासियों के दर्शन और देश की परिस्थिति समझाने के लिये हरिद्वार मेले में आ रहे हैं। ये लोग नील पर्वत पर भी आयेंगे। अतः मेरे अन्दर भी उनके दर्शन के लिये और फिर उनसे वार्तालाप करने के लिये प्रबल इच्छा उत्पन्न हो गई थी।

अब तीन दिन बाद ही पाँच अज्ञातनामा और अपरिचित सज्जन हमारे अति संकीर्ण कुटीर के सम्मुख आगर पूछने लगे-''आबू-शैल से आये हुए महात्मा जी कहाँ हैं? हम लोग उनसे मिलना चाहते हैं[३३६]।'' मैंने उन्हें अपना परिचय दे दिया। उन लोगों ने भी अपना-अपना परिचय दिया।

उनमें से प्रथम थे-द्वितीय बाजीराव पेशवा के दत्तक पुत्र धून्धूपन्त (नाना साहब); द्वितीय थे- उनके बन्धु बाला साहब; तृतीय थे-अजीमुल्ला खाँ; चतुर्थ थे- तात्याटोपे और पंचम थे-जगदीशपुर के जमींदार बाबू कुंवर सिंह। ये पाँचों सज्जन प्रणिपात करके मेरे सम्मुख बैठ गए[३३७]।

नाना सहब ने कहा-''महात्मा जी! विदेशी और विधर्मी अंग्रेज आकर स्वदेश और स्वधर्म को धीरे-धीरे ग्रास कर रहे हैं। इसका किसी तरह से निवारण करना चाहिए और इसे किस तरह से रोकना चाहिये-इसके बारे में आपकी क्या राय है? हम लोग हरिद्वार में आये हुए मुख्य-मुख्य साधु-संन्यासियों से इस बात पर अभिमत ले रहे हैं।''

मेरा अभिमत-किसी विदेशी राजा को किसी दूसरे देश पर शासन करने का अधिकार नहीं है। अंग्रेज विदेशी हैं, इसलिए भारत पर उनको शासन करने का अधिकार नहीं है। विदेशी शासक विदेशी शासितों का शोषण करके ही अपनी समृद्धि करते हैं, अंग्रेजों की समृद्धि भारत के शोषण पर ही है। किसी वन्य, बर्वर, असभ्य देश पर किसी सुसभ्य जाति का शासन उस देश के कल्याण के लिये हो सकता है। परन्तु भारत असभ्य देश नहीं है और अंग्रेज भारतीयों से अधिक सुसभ्य भी नहीं हैं। वे केवल हिंस्त्र पशु की तरह हठधर्मी से शासन चला रहे हैं जिसको भारतवर्ष नहीं चाहता है। भारत जैसे न्यायप्रिय, सुसभ्य और पुराने देश को पद दलित करना महापाप

है और इसको सहन करना और भी अधिक महापाप है । भारत जब प्राणपण से चाहेगा कि हम अंग्रेजों को नहीं चाहते हैं, तब ही अंग्रेज भारत का शासन छोड़ने के लिये बाध्य होंगे[३३८]।

द्वितीय सज्जन बाला साहब ने जिज्ञासा की-''हमारे अपने दोष या त्रुटियाँ क्या है जिससे हमारी ऐसी दुर्दशा है ? इस पर आपका क्या अभिमत है ?''

मेरा अभिमत- युधिष्ठिर-दुर्योधन, जयचन्द-पृथ्वीराज, मानसिंह-प्रतापसिंह में जो भ्रातृकलह आत्म-विरोध था, वही भारत के सर्वनाश का मुख्य कारण है । आगे चलकर हम देखते हैं कि जब मुगल साम्राज्य का पतन हुआ तब मराठा और सिख-दोनों की शक्ति पृथक् रूप से या समवेत रूप से भारतवर्ष पर शासन चलाने के लिये यथेष्ठ ही थी । लेकिन दोनों के अन्दर आत्म-विरोध के कारण भारत अंग्रेजों के हाथों में चला गया । यह अनैक्यता और आत्म-विरोध ही हमारी दुर्दशा का कारण है[३३९]।

तृतीय सज्जन अजीमुल्ला खाँ ने कहा- ''महात्मा जी ! भारत के व्यापक प्रजा-विद्रोह के बारे में आपका क्या अभिमत है ?''

मेरा अभिमत-मैने जहाँ तक देखा है यह भविष्यत् के गणविद्रोह का आभास मात्र ही है । यह विद्रोह साम्प्रदायिक या संकीर्ण नहीं है । इसमें धनी-गरीब, कृषक-प्रजा, शिक्षित-अशिक्षित सब लोग सम्मिलित हैं । यह गण-जागरण भारत को नयी जीवनी शक्ति से संजीवित करेगा । धर्म की भित्ति पर यह आन्दोलन जब तक रहेगा इसका भविष्यत् तब तक उज्ज्वल है । शिशु और नारियों पर जब तक आघात नहीं पहुँचेगा तब तक इसका स्वरूप धार्मिक ही रहेगा । इस गण-जागरण में हिन्दू-मुसलमान सम्मिलित हो रहे हैं । दिल्ली के बादशाह और विठूर के पेशवा-दोनों ही इसमें सम्मिलित हो गये हैं । यदि हिन्दू जनता अंग्रेजों को हटाकर पेशवा को राजा बनाना चाहे या मुसलमान जनता अंग्रेजों को हटाकर दिल्ली के बादशाह को ही भारत का बादशाह बनाना चाहे तब तो गण०जागरण व्यर्थ बन जायेगा । पेशवा और बादशाह में प्रतिद्वन्द्विता ही है ।

पंजाब का प्रबल पराकांत सामरिक सिख-सम्प्रदाय शायद पेशवा-परिचालित इस आन्दोलन में भाग नहीं लेगा, बल्कि इसमें बाधा ही डालेगा । क्योंकि अंग्रेज और अफगान युद्ध में पेशवा ने दूसरे का राज्य हड़पने के लिये अंग्रेज को पांच लाख रुपये ऋण-स्वरूप दिये थे । इसके बाद ही अंग्रेज और सिख-युद्ध में पेशवा ने अंग्रेज पक्ष को एक हजार पदातिक सेना और एक हजार अश्वारोही सैन्य सहायता के लिये भेज दिये थे । पेशवा के इस गर्हित आचरण को शायद सिख लोग इतनी जल्दी भूलेंगे नहीं ।

नेपाल के सम्बन्ध में भी बात ऐसी ही है । नेपाल की राजधानी के रक्षार्थ नेपाली लोगों ने अंग्रेजों के साथ प्राणपण से युद्ध किया था । भारतीय साधारण प्रजा से उस समय कुछ भी सहायता नहीं मिली थी । नेपाली लोगों ने इस बात को भुलाया नहीं है ।

फिर भी इस भावी गणयुद्ध का परिणाम शुभ है । प्लासी-युद्ध के एक सौ वर्ष बाद यह गण-युद्ध होने वाला है । फिर आगे एक सौ वर्षों तक यह युद्ध चलता ही रहेगा । तब युद्ध-जय अवश्यम्भावी होगा । बहुत कुछ आहुतियां अब भी शेष हैं[३४०]।

चतुर्थ सज्जन तात्याटोपे ने पूछा-''महात्मा जी ! भारतवर्ष-व्यापी जिस प्रजा-विद्रोह का आभास आपकी दृष्टि में आ गया है, उसके कारणों के बारे में आपका क्या अभिमत है?''

मेरा अभिमत-इस सम्भाव्य प्रजा-विद्रोह के मूल कारणों को हम भिन्न-भिन्न श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं । यथा - धर्म-नीतिक, समाज-नीतिक, राज-नीतिक, अर्थ-नीतिक, युद्ध-नीतिक और प्रत्यक्ष ।

धर्म-नीतिक कारण- भारत के करोड़ों हिन्दू और मुसलमानों को नरक से बचाने के लिये और सीधे स्वर्ग में भेजने के लिये हजारों श्वेतांग पादरी विदेशों से भारत-भूमि में- ऋषि-मुनियों के देश में आए हैं । इनका पालन-पोषण और अमीरी, भारत के गरीब प्रजाओं के कष्ट-प्रदत्त राजस्व से होती है । इनकी राजकीय स्थिति और प्रभाव जज-मजिस्ट्रेटों से कम नहीं है । गरीब-दुःखी, असहाय-अनपढ़ और भोले-भाले लोगों को आर्थिक प्रलोभन से ईसाई बनाना ही इनका प्रधान कार्य है । अस्पताल, जेलखाने, सरकारी कार्यालय, विचारालय आदि विभागों की नियुक्तियों में इनका असीम प्रभाव है । हिन्दू धर्म और मुस्लिम धर्म के बारे में कटूक्तियों और निन्दावाद का प्रचार करना ही इनका धर्म-प्रचार है । अकाल-पीड़ित स्थानों में और गरीब गांवों में आर्थिक सहायता के बल पर हिन्दू-मुसलमान नवयुवकों को ईसाई या भारत-विद्वेषी बनाना ही इनका उद्देश्य है । बड़े-बड़े मेधावी, कवि, साहित्यिक, वैज्ञानिक नवयुवकों को पादरियों ने भारत-द्रोही बना दिया है, यह असहनीय है ।

समाज-नीतिक कारण- लगभग एक सौ वर्ष पहले से ही सैकड़ों, हजारों अंग्रेज व्यवसायी, राजकर्मचारी, धर्म-प्रचारक के रूप में भारतीयों के सम्पर्क में आये हैं लेकिन उन्होंने अपने को भारतीयों से सर्वथा अलग करके रखा है । उनके लिये भारत के सब कोई और सब कुछ घृणा के पात्र और घृणा की वस्तु हैं[३४१]। इससे अंग्रेज और भारतीयों के अन्दर महान् व्यवधान उत्पन्न हो गया है, जिसकी प्रतिक्रिया के रूप में भारतीय जनसाधारण के अन्दर प्रबल विद्रोह का भाव उत्पन्न हो गया है ।

राज-नीतिक कारण- अंग्रेजों ने राज्य विस्तार के लिये युद्ध-नीति ग्रहण की है जिससे पंजाब और पेगु (ब्रह्म देश) पर अधिकार कर लिया है । सिक्किम को एकांश युद्ध-नीति से ही लिया गया है । स्वत्व-विलोप नीति से सतारा, सम्बलपुर, झांसी, भागलपुर, उदयपुर, नागपुर, जैतपुर, करौली इत्यादि राज्यों पर भी अधिकार कर लिया है । कई एक राज्यों के राजपरिवारों को भत्ता देने का वचन दिया गया, फिर उसको भी बन्द कर दिया गया । राजप्रासाद लुंठन किया गया, स्त्रियों को अपमानित किया गया । अराजकता का बहाना बनाकर भी कई एक राज्यों का ग्रास किया गया । इन सब जबरदस्ती और दस्युवृत्तियों के कारण, अत्याचार और अविचार के कारण जनसाधारण का मन विषाक्तं, घृणा, विद्वेष और प्रतिहिंसा-परायण बन गया है । इसको सहन करना असम्भव हो गया है । प्रजाविद्रोह का यह मुख्य कारण है ।

अर्थ-नीतिक कारण- अंग्रेज शासन के एक सौ वर्षों के अन्दर देश से अपरिमित सोना, चांदी, मणि-माणिक्य-रत्नादि, सुप्रसिद्ध कोहिनूर-स्यमन्तक आदि अमूल्य मणि आंग्ल-देश में भेज दिये गए[३४२]। यन्त्र शिल्प के प्रवर्तन से कुटीर-शिल्प, स्वदेशी शिल्पों की जगह विदेशी शिल्पों की आमद अधिक रूप से हुई है । जिसके कारण देश की समृद्धि विनष्ट हो गई और अन्नाभाव दुर्भिक्षादि बार-बार आने लगे । प्रजाओं के लुण्ठन के लिये घर-घर चौकीदारी-कर, शिक्षा-कर, पथ-कर, जल-कर, आय-कर, शिप-कर और गवादि पशुओं के भूमि चारण-कर आदिकों की कमवृद्धि प्रचलित हुई है[३४३]। जनसाधारण अन्नाभाव से

अर्ध-मृत हो रहा है । प्रजा-विद्रोह अन्नाभाव के कारण स्वाभाविक गति से ही आ रहा है ।

युद्ध-नीतिक कारण- अनपढ़-मूर्ख जनसाधारण को शिक्षा-दीक्षा से वंचित करके वाल्य-किशोर-यौवन अवस्था में अधिक वेतन के प्रलोभन से युद्ध-शिक्षा के लिये भेज दिया जाता है । राज्य-विस्तार में ये लोग ही परम सहायक हैं । इनके प्रति विदेशी सामरिक कर्मचारियों का व्यवहार अमानवोचित है । इनके वेतन से पच्चीस गुणा अधिक वेतन मामूली अंग्रेज सैनिकों को मिलता है । जब इच्छा हो, जहाँ इच्छा हो युद्ध के लिये ये लोग भेजे जाते हैं । गन्तव्य स्थान का नाम तक भी नहीं बताया जाता है । युद्ध-भूमि में मृत्यु होने पर घर में समाचार भी नहीं पहुंचाया जाता है । सामरिक जाति- यह नाम रखकर स्वास्थ्यवान् तरुण एकमात्र पुत्र को भी परवाने के बल पर पकड़कर सामरिक कर्मचारी ले जाते हैं । छावनी में धर्म कृत्य करना, धार्मिक चिह्नादि को धारण करना अवैध और निषिद्ध है । इस पर तनिक भी आपत्ति करने से सामरिक विचार के अनुसार गोलियों से मृत्यु-दण्ड दिया जाता है । आज से पचास वर्ष पूर्व वेल्लोर में और तीस वर्ष पूर्व बैरकपुर में इस प्रकार के अत्याचार और सामरिक दण्डों का विधान हुआ था । दण्ड-प्राप्त सैनिकों का प्राप्य शेष वेतन घर में नहीं भेजा जाता है । प्राण-दण्ड का समाचार तक नहीं भेजा जाता है । बहुत दिनों तक घर में पत्र आदि नहीं आने से अनुमान कर लिया जाता है कि सामरिक कानून से प्राण-दण्ड मिला होगा । इस स्थिति को सहन करना कठिन हो गया है । प्रजा-विद्रोह का यह भी कारण है ।

प्रत्यक्ष कारण कृष्णांग जातियों के प्रति प्रतिदिन और सदैव जो व्यवहार सभी जगह देखे जाते हैं, पशुओं के प्रति भी ऐसा निर्दय और निर्लज्ज व्यवहार नहीं देखा जाता है, जो कि अधिक दिनों तक सहन करना कठिन है । इन सब कारणों से प्रजा-विद्रोह अवश्यम्भावी प्रतीत हुआ है ।

पंचम सज्जन कुंवरसिंह ने पूछा-''स्वामी जी महाराज ! युद्ध में जय अथवा पराजय अनिश्चित होती है । मैं आपसे पूछता हूँ कि हमारा यह प्रजा-जागरण या गण-युद्ध सफल होगा या विफल होगा ?''

मेरा अभिमत-स्वतन्त्रता युद्ध कभी विफल नहीं होता है । भारत धीरे-धीरे सौ वर्षों के अन्दर परतन्त्र बन गया है, अतः इसको स्वतन्त्र बनाने में भी सौ वर्ष और लग जाएंगे। तब भारत पूर्ण स्वतन्त्र बनकर फिर से जगत् पर अपने गौरव को प्रकाशित करेगा[३४४]। इस स्वतन्त्रता-प्राप्ति में बहुत से अमूल्य जीवनों की आहुतियाँ डाली जाएंगी ।

मैं हरिद्वार के कुम्भ मेले में दो उद्देश्यों की पूर्ति के लिये आया हूं-

प्रधान उद्देश्य- योग-सिद्ध साधकों का सन्धान करना । इससे मेरे पारमार्थिक की प्राप्ति होगी ।

गौणउद्देश्य- कुम्भ मेले में भारत के और तिब्बत के सभी साधु और महन्त लोग अपने-अपने शिष्य-सम्प्रदायों के साथ समवेत होते हैं[३४५]। भारत में लाखों साधु हैं परन्तु उनके अन्दर संगठन नहीं है । अतः सभी को अपने-अपने गुरुओं के आधीन संगठित करना आवश्यक है । मैं सभी गुरुओं से मिलूंगा । देश की इस दयनीय स्थिति में सुधार के लिये मैं उनको प्रेरणा दूंगा । आप लोगों का प्रजा-विद्रोह प्रत्यक्ष रूप में रहेगा और उसका फल भी प्रत्यक्ष ही होगा, क्योंकि आप लोग मुख्य रूप से पार्थिव जीवन बिताते हैं । लेकिन साधु लोग अपार्थिव और पारमार्थिक जीवन बिताते हैं जिसका स्वरूप और फल सम्पूर्ण अप्रत्यक्ष है । इनकी संख्या कई एक लाख है । मैं इन त्यागी साधुओं को संगठित करने के लिये प्राणपण से प्रयत्न करूँगा ।

भारत की इस दुर्दशा को हटाने से भारत इतने विराट् और विशाल जनवल को प्राप्त हो जाये तो यह सौभाग्य की बात है[३४६]। भारत के प्रजा-विद्रोह और साधु-संगठन के सफल होने से देश का सर्वाङ्गीण कल्याण होगा३४७, इसमें सन्देह नहीं है । साधु-संगठन की परिकल्पना को छोड़ देने से मैं आज ही आपके साथ प्रजा-विद्रोह में सम्मिलित हो सकता हूं । मैं हरिद्वार के कुम्भ मेले से मानसरोवर, कैलाश और तिब्बत की ोर योगी-साधुओं के सन्धान में जाना चाहता हूँ, जहाँ असंख्य साधु-संन्यासी हिमालय की विभिन्न ऋषि-पल्लियों में और पर्वत-कन्दरों में रहकर योग-साधना करते हैं और कोई-कोई साधना के आसनों में बैठे-बैठे ही जीवनों को छोड़ देते हैं ।

पाँचों सज्जनों ने एक ही स्वर में मुझसे अनुरोध किया कि मैं योगियों के सन्धान में और साधुओं के संगठन में तत्पर रहूं । प्रजा-विद्रोह के कार्य में सैकड़ों-सहस्त्रों मनुष्य पेशावर से कलकत्ता तक और मेरठ से कर्णाटक तक नियुक्त हुे हैं, लेकिन साधु-संगठन के कार्य में कोई भी दृष्टिगोचर नहीं होता ।

कमल पुष्प और चपाती- अजीमुल्ला खाँ ने प्रश्न किया था- ''हमारी यह प्रजा-विद्रोह की वाणी किस रूप से और द्रुतगति से सामरिक और असामरिक जनता में गुप्त रूप से प्रचारित हो सकती है, इसके बारे में हम आपसे उपदेश चाहते हैं ।''

मैंने इस कार्य के बारे में बहुत ही प्राचीन सनातन पद्धति को बतला दिया था । सामरिक जनता में प्रचार के लिये कमल पुष्प और असामरिक जनता में प्रचार के लिये चपातियों का व्यवहार होता है । किसी सैन्यावास में किसी एक सैन्य के पास कमल पुष्प को हाथ में देकर व्यापक युद्ध-घोषणा की तारीख बता दी जाये तो निःशब्दपूर्वक एक हाथ से दूसरे हाथ तक कमल पुष्प भी चलता रहेगा और कान्ति की वाणी का भी प्रचार होता रहेगा । इससे किसी को सन्देह भी पैदा नहीं होगा । इस रूप से एक सैन्यावास से दूसरे सैन्यावास तक संवाद निःसन्दिग्ध रूप से और सरलता से पहुंच जाएगा ।

असामरिक जनता में प्रजा-विद्रोह की वाणी उसी रूप से प्रचारित करने के लिये किसी गांव में प्रवेश कर किसी व्यक्ति को व्यापक विद्रोह की ठीक तारीख बता देने के बाद एक व्यक्ति को चपाती दे देनी चाहिये । वह उसे एक टुकड़ा लेने के बाद दूसरे व्यक्ति के हाथ तक पहुंचा देगा । इस रूप में टुकड़े हो-होकर चपाती समाप्त हो जाने पर अगला व्यक्ति नई चपाती बनवाके उसी रूप से दूसरे हाथों में दे देगा । इस प्रणाली से गांव से गांवों तक एवं शहर से शहरों तक व्यापक विद्रोह का समाचार प्रचारित हो जाएगा ।

किसी गुप्तवाणी या पवित्र समाचार के प्रचार के लिये यह अत्यन्त प्राचीन प्रणाली है[३४८]। अजीमुल्ला खाँ ने मेरी बतायी हुई इस प्रणाली के द्वारा सारे भारत में सर्वत्र क्रान्ति के समाचार को पहुँचाने का प्रबन्ध किया था । 'जिनके हाथों में चपाती या कमल पुष्प आ जाएगा और यदि वे इसको दूसरे होथों में नहीं देंगे तो भयंकर पाप के भागी वन जाएंगे'-इस स्वाभाविक भय से ही प्रचार-कार्य चालू रहा। इस सांकेतिक अन्यथा गुप्त प्रणाली के प्रवर्तक बहुत पुराने जमाने के व्यक्ति थे । आजकल भी यह प्रणाली चालू है[३४९]।

इस सुदीर्घ चर्चा के बाद पाँचों सज्जन प्रणाम करके चले गए[३५०]। श्रीमन्त नाना साहब ने मुझको हिमालय भ्रमण के बाद कानपुर (बिठूर)[३५१] आने के लिये आमन्त्रण दिया था और मैंने उनका यह आमन्त्रण स्वीकार कर लिया था[३५२]।

माँसाहार छोड़ें - शाकाहार अपनाएँ : आखिर क्यों ?

-डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

उपसंहार

इन सब कष्टकारक परिस्थितियों के बीच भी आशा की एक किरण टिमटिमाती नजर आती है । यह देश विदुर, चाणक्य, दयानन्द, टैगोर और गाँधी का देश है जो एकला चलो रे में विश्वास रखता है । बिगाड़ की शुरूआत समूह से और सुधार की केवल एक से होती है, इतिहास इसका साक्षी है । शाकाहारी आन्दोलन भले ही एक या दो व्यक्ति शुरू करें लेकिन वह जोर पकड़ेगा, व्यापक होगा, प्रभाव छोड़ेगा और सफल होगा क्योंकि उसके साथ विज्ञान है, अध्यात्म है, चिकित्सा शास्त्र है, अर्थशास्त्र है, नैतिकता और इंसानियत है । जब यह देश मांसाहार के अभिशाप से मुक्त होगा तब पशु-धन में आशातीत वृद्धि होगी और दूध, दही, घी की नदियाँ पुनः बहने लगेंगी, कोई नन्हा बच्चा, कोई प्रसूता माँ-बेटी इनसे वंचित न रहेंगी । गोबर से इतनी रसोई गैस, बिजली और फ्यूल मिलने लगेगी कि गैस सिलण्डर के लिए लाईन लगानी न पड़ेगी, बिजली के दाम परेशान न करेंगे, डीजल-पेट्रोल विदेश से मंगाना न पड़ेगा । देसी खाद इतना बनने लेगा कि रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता पूर्णतया खत्म हो जायेगी, कृषि भूमि बंजर व बांझ होने से बच जोयंगी, अरबों रुपये की जो सब्सीडी रासायनिक उर्वरक उद्योग को दी जाती है वह बचने लगेगी । जैविक खाद से उत्पन्न निरोगी अन्न, चावल, दाल, सब्जी, फल, चारा, दूध, तेल मिलेंगे तो सैकड़ों रोगों से स्वतः ही मुक्ति मिलेगी । पंचगव्यों (गाय का दूध, दही, घी, छाछ व मूत्र) के सेवन से एलौपैथिक चिकित्सा का निष्कासन और आयुर्वेद का पुनर्स्थापन होने से प्रतिवर्ष अरबों रुपये की विदेशी मुद्रा बचाई जा सकेगी । पर्यावरण प्रदूषण मुक्त होगा तो गंगा यमुना, चम्बल जैसी नदियाँ भी स्वच्छ, शुद्ध, पवित्र होने लगेंगी । मानसिकता सात्विक होने से आपराधिक मनोवृत्तियों का ग्राफ नीचे गिरने लगेगा और अध्यात्म जोर पकड़ने लगेगा, शराब खोरी से मुक्ति मिलेगी क्योंकि शराब-मांस का चोली-दामन का साथ है । गोहत्या को लेकर जो सामप्रदायिक सौहार्द बिगड़ रहा है, साम्प्रदायिक दंगों की सम्भावना बनी रहती है वह स्वतः ही खत्म हो जायेगी । गोबर आधारित सैंकड़ों लघु उद्योग जैसे साबुन, कागज, गैस, प्लाई, ईंट निर्माण के उद्योगों से देहात में ही रोजगार की नई सम्भावनाएं पैदा होंगी जिससे शहरों की ओर देहातियों का पलायन रुक जायेगा । भूकम्पों, चक्रवातों, अकाल दुर्भिक्ष जैसी विनाशकारी प्राकृतिक आपदाओं से मुक्ति मिलेगी । पड़ोसी देशों को होने वाली पशु तस्करी से मुक्ति मिलेगी । इससे संविधान व कानून के प्रति विश्वास और सम्मान भी बढ़ेगा । देश की माँस लॉबी, चर्म उद्योग लॉबी, रासायिनक उर्वरक लॉबी, शराब लाबी, ट्रैक्टर लॉबी से प्राप्त धन से जो चुनाव प्रणाली भ्रष्ट हो रही है वह स्वच्छ होने लगेगी । यही वह प्रशस्त पथ है जो भारत की अर्थ व्यवस्था में आशातीत सुधार लाकर इस देश को पुनः सोने की चिड़िया, स्वर्णभूमि, देव भूमि बना सकता है । भारत में संसाधनों की नहीं प्रगतिशील दृष्टिकोण, रचनात्मक रीति-नीति और सकारात्मक इच्छा शक्ति की कमी है । इस कमी को इस देश के प्राचीन जीवन मूल्यो को अपना कर ही दूर किया जा सकता है । इस देश के प्राण वेदों में, उपनिषदों में, दर्शनों में, स्मृतियों में, रामायण और गीता में बसते हैं अतः भारत के उद्धार का पथ इन प्राणों से होकर ही निकल सकता है । आज का विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र, अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र और मानव शास्त्र इसी सत्य का उद्घाटन करता नजर आ रहा है । महान संतों व सम्प्रदायों ने इस देश में जिस सामाजिक, समेकित, समन्वित संस्कृति का सृजन किया है वह भी इसी ओर संकेत कर रही है ।

आप से अपील

हम जहाँ भी हैं, अकेले हैं या किसी संगठन, संस्थान, सम्प्रदाय या जमात से जुड़े हुए हैं स्वहित, समाज हित, राष्ट्रहित और विश्व हित में हमारा पहला दायित्व यह बनता है कि यदि हम किसी भी वजह से मांसाहारी हैं तो उस वजह का निरपेक्ष विश्लेषण करते हुए खुद को मानसिक रूप से शाकाहार के लिए तैयार करें । दूसरा दायित्व यह बनता है कि अपने सम्प्रदाय व जातिगत समाज, संस्थान, संगठन को मांसाहार छोड़ने व शाकाहार अपनाने का ईमानदारी व निष्ठा से प्रयास करें भले ही आप इसमें विफल मनोरथ भी क्यों न रहें । हमारा तीसरा दायित्व यह बना है कि अपने सम्प्रदाय व जातिगत समाज, संस्थान, संगठन को मांसाहार छोड़ने व शाकाहार अपनाने का ईमानदारी व निष्ठा से प्रयास करें भले ही आप इसमें विफल मनोरथ भी क्यों न रहें । हमारा तीसरा दायित्व यह बनता है कि अपने स्तर पर फेसबुक, वैबसाइट, इण्टरनैट आदि आधुनिक संचार साधनों का प्रयोग शाकाहार के प्रचार में करें। हमारा चौथा दायित्व इलैक्ट्रोनिक मीडिया, सोशल मीडिया, प्रेस मीडिया, फिल्म उद्योग को इस बात के लिए तैयार करना है कि किसी भी सूरत में मांसाहार को प्रोत्साहन न दें और शाकाहार के प्रचार में सहायक बनें । हमारा पांचवा दायित्व यह बनता है कि हमारे सामने कितनी ही भयावह, जटिल परिस्थितियाँ क्यों न आयें हम एकनिष्ठ भाव से शाकाहार को एक मिशन के रूप में एक जीवनशैली के रूप में सदा जीवंत रखें । हमारा छठा दायित्व यह बनता है कि अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार स्वयं या किसी के साथ मिलकर या अपने संगठन, संस्थान की ओर से इस पुस्तक का हिन्दी अथवा इंग्लिश, उर्दू, पंजाबी, बंगाली, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलगू, कन्नड़, उड़िया, असमी आदि भाषाओं में अनुवाद व प्रकाशन करा इसे अधिकाधिक संख्या में निःशुल्क वितरित करायें और दूसरों को ऐसा करने की प्रेरणा दें । इस पुस्तक का सारांश भी एक या दो पृष्ठीय पैम्फलेट/पर्चे के रूप में प्रकाशित

करके बांटा जा सकता है । इस प्रकार प्रकाशित सामग्री की सूचना हमारे मिशन के मुख्यालय को भी भेंजें । हमारा सातवों दायित्व यह बनता है कि शाकाहार को लेकर विविध मंचों से सेमीनार आयोजित कराये जायें, शाकाहार सम्मेलन आयोजित कराये जायें, प्रचार यात्राएं निकाली जायें, मुख्य मार्गों या स्थानों पर पोस्टर, होर्डिंग आदि लगाये जायें । चूंकि हमने मांसाहार छुड़वाना है अतः हमारा ध्यान और प्रचार मांसाहारी लोगों के क्षेत्र समाज, सम्प्रदाय, जाति में उनकी ही मातृभाषा में होना चाहिए । जहां का समुदाय साक्षर न हो वहां प्रचार यात्राओं सम्मेलनों, गोष्ठियों का आयोजन किया जाना चाहिए ।

शाकाहारी मिशन एक समग्र आन्दोलन के रूप में चलना चाहिए अतः किसी संस्था विशेष को इसका श्रेय बटोरने से बचना चाहिए । इस अभियान से जुड़े सभी संगठन अपने-अपने स्तर पर जो ठीक समझें, वह करें । इस अभियान को पैसा बटोरने, श्रेय बटोरने अथवा अन्य किसी निहित स्वार्थ की पूर्ति करने के लिए न अपनाएँ बल्कि अखिल मानवता के कल्याण हेतु अपनाएँ । इस अभियान का एकमात्र उद्देश्य माँसाहार को छुड़वाना है अतः किसी सम्प्रदाय या समुदाय विशेष की धार्मिक भावनाएँ आहत न हों इसका ध्यान भी रखा जाये । अभियान में सहृदयता से काम लिया जाये न कि किसी दुराग्रह, पूर्वाग्रह या कटुता से, तभी इसे सफल बनाया जा सकेगा । हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि केन्द्र व राज्य सरकारों में सदा ऐसे शरारती तत्व विद्यमान रहते हैं जो अपने व्यक्तिगत हितों, अपने राजनीति हितों तथा अपने चाहते उद्योगपतियों के हितों को सर्वोपरि मानकर माँसाहार व शराबखोरी को अधिकाधिक प्रचलित करने, रासायनिक उर्वरकों तथा ट्रैक्टरों के प्रयोग को प्रोत्साहित करने वाली गलत नीतियां बनवाने व उन्हें लागू करवाने की दिशा में सक्रिय रहते हैं । उदाहरण के रूप में आप सभी ने फरवरी, २०१३ के दूसरे सप्ताह में 'अमर उजाला' व 'दैनिक जागरण' आदि पत्रों में प्रकाशित यह समाचार अवश्य पढ़ा होगा कि केन्द्र सरकार अपने स्तर पर गोमांस खाने की सलाह नागरिकों को दे रही है । केन्द्र सरकार का अल्पसंख्यक एवं बाल विकास मंत्रालय उत्तर प्रदेश के अल्पसंख्यक बहुल क्षेत्रों में शरीर में ऑक्सीजन संरक्षण और खून बनाने के लिए पत्तेदार सब्जियों के साथ ही मुर्गे व गाय का मांस खाने की सलाह दे रहा है । यह सलाह बाकायदा एक पत्रक वितरित करके दी जा रही है । जब हिन्दू संगठनों ने इसके विरुद्ध आवाज उठाई, प्रदर्शन किये, मामले को संसद में उठाया तो इस पत्रक पर तुरंत प्रतिबन्ध लगा दिया गया तथा जिसके पास यह पत्रक हो उसे प्रशासन को लौटाने की अपील निकाली गई । यह घटना मवाना (मेरठ) क्षेत्र की है और यह सभी जानते हैं कि उत्तर प्रदेश में गोहत्या विरोधी कानून पहले से लागू है । उत्तर प्रदेश इलाहाबाद (प्रयागराज) में इन दिनों महाकुम्भ चल रहा था जहां हिन्दू संत-महंत व श्रद्धालु जन करोड़ों की संख्या में उपस्थित थे । ऐसे नाजुक समय में ऐसी शरारत प्रदेश को कितनी महंगी पड़ सकती थी, ऐसा इस अभियान के संयोजक क्या नहीं समझ सके थे । इस प्रकार की शरारतें प्रायः सरकार में बैठे शरारती तत्व जानबूझ कर कराते रहते हैं । सण्डे हो या मण्डे खूब खाओ अण्डे, टी. वी. चैनलों व पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से यह प्रचार भी इन्हीं शरारती त्तवों की देन था । दिल्ली में आयोजित राष्ट्र मण्डल खेलों के अवसर पर विदेशी खिलाड़ियों, अधिकारियों व अतिथियों को सरकार द्वारा गोमाँस परोसने की शर्मनाक तैयारी का समाचार जब दिल्ली के ५ जनवरी, २०१० के हिन्दुस्तान टाइम्स में प्रकाशित हुआ तो इन पंक्तियों के लेखक ने इस पर संज्ञान लेते हुए इसके विरुद्ध आन्दोलन किया । दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित जी से २३ जनवरी, २०१० को और महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल से २४ फरवरी, २०१० को मिलकर दो प्रतिनिधि मण्डलों ने अपना ज्ञापन देकर सरकार को चेताया कि सन् १९९४ में बनाये गये कानून के अनुसार दिल्ली में गाय को काटना, माँस बनाना, अपने पास रखना, परोसना व बाहर से मंगवाना कानून अपराध है जिसका उल्लंघन करने पर एक साल की कैद हो सकती है । इसी का परिणाम निकला कि राष्ट्र मण्डल खेलों में गोमाँस न परोसने का आदेश राष्ट्र मण्डल खेलों की आयोजन समिति के अध्यक्ष सुरेश कलमाड़ी को निकालना पड़ा जो बाकायदा २३ जुलाई के समाचार पत्रों में भी प्रकाशित हुआ । इसी कारण २५ जुलाई, २०१० को जन्तर-मन्तर पर प्रस्तावित विशाल प्रदर्शन हमें स्थगित करना पड़ा था । दिल्ली नगर निगम में पक्ष और प्रतिपक्ष दोनों ने मिलकर भी गोमाँस परोसने की इस योजना की कड़ी भर्त्सना की थी । देशभर में मुर्गी पालन, सूअर पालन, खरगोश पालन, मछली पालन आदि का व्यवसाय सस्ते, लम्बी अवधि के लोन दिलवा कर इन्हीं शरारती तत्वों द्वारा देश भर में फैलाया गया है । इससे जहां शराब की खपत बढ़ी है, वहां अपराधों का ग्राफ भी ऊँचा उठा है । ऐसे शरारती तत्वों पर नजर रखने व उनके मंसूबों को सफल न होने देने के लिए भी हमें सावधान, सक्रिय और कटिबद्ध रहना होगा ।

असल में हमारे संविधान निर्माताओं से संविधान बनाते समय एक भारी चूक अनुच्छेद-१९ के सम्बन्ध में हुई है । इस अनुच्छेद के खण्ड एक में वाक् स्वतंत्रता, सम्मेलन की स्वतन्त्रता, संगठन की स्वतंत्रता, भारत में विचरण, निवास और व्यापार की स्वतंत्रता का उल्लेख है । जाहिर है कि कोई भी वृत्ति उपजीविका, व्यापार या कारोबार चलाने की इस छूट के नाम पर बूचड़खाने चलाना, शराब की डिस्टिलरीज स्थापित करना, बीड़ी-सिग्रेट, पान, गुटखा आदि की फैक्ट्रीज लगाना, मांस के मलबे से उत्पाद बनाने की इकाइयां स्थापित करना, वेश्यावृत्ति को व्यवसाय का दर्जा देना तथा हीजड़ों को लाइसेंस देकर बेहूदगी की वृत्ति बढ़ाना जैसे असामाजिक धंधों के पनपने की राह इस अनुच्छेद से निकल रही है । समलैंगिकता, जो कानून में दण्डनीय अपराध था अब इसी अनियंत्रित छूट के तहत अपराध नहीं रहा है । बिना विवाह के नर-नारी का एक ही छत के नीचे रहकर वैवाहिक जीवन जीना अथवा मर्द का मर्द से तथा नारी का नारी से विवाह करना भी अब कानूनन जायज बन चुका है । अतः इस अनुच्छेद में संशोधन करने अर्थात् वृत्ति, उपजीविका, व्यापार या धंधे से समाज में

क्रूरता, हिंसा, वैमनस्य, साम्प्रदायिकता, अश्लीलता बढ़े, प्रकृति का संतुलन विगड़े या पर्यावरण प्रदूषित हो तथा प्राकृतिक आपदाओं की पृष्ठभूमि तैयार हो, व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक स्वास्थ्य को हानि पहुँचती हो, किसी समुदाय विशेष की आस्था और भावना को ठेस पहुँचती हो ऐसे धंधे पूर्णतया प्रतिबन्धित हों । यद्यपि खण्ड-१ में दी गई इस छूट को इसी अनुच्छेद के खण्ड-२, ३, ४, ५, ७ में इन सब स्वतंत्रताओं का राज्य द्वारा हरण करने का प्रावधान तो रखा गया है लेकिन लोक सम्मति का ध्यान नहीं रखा गया है । दूसरे, भारत के किसी भी भाग में बस जाने या व्यापार करने के अधिकार को धारा-३७० तथा ३६९ ने प्रतिवन्धित कर दिया है जो कुछ विशिष्ट प्रान्तों में लागू है, भले ही बसने वाले कितने ही नेक व उद्यमी क्यों न हो तथा व्यापार कितना ही जन-कल्याणकारी क्यों न हो । कश्मीर में भारत सरकार यदि प्रांतीय सरकार से अनुमति लिये बगैर डाकघर खोलना चाहे तो उसे इसके लिए जमीन नहीं मिल सकती । नागालैण्ड में अगर हम कोई स्कूल या धार्मिक संगठन बनाना चाहें तो नहीं बना सकते । आखिर यह कैसी आजादी व लोकतंत्र है ? इस मुद्दे पर अर्थात् लोक सम्मति को आदर देते हुए उपजीविका, व्यापार या धंधे को परिभाषित करने के लिए मुखर होकर हमें सरकार पर दवाव बना कर संविधान में वांछित संशोधन कराना होगा ताकि रासायनिक उर्वरक, माँस, शराब और तम्बाकू आधारित जानलेवा उद्योगों को ब्द कराया जा सके ।

जाहिर है कि माँसाहार के विरोध और शाकाहार के समर्थन में हम जो आन्दोलन शुरु करने जा रहे हैं वह आन्दोलन श्रम-साध्य, व्यय साध्य और समय-साध्य होगा लेकिन यदि देश की धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक, चिकित्सिक, सर्वोदयी संस्थाएँ, पत्र-पत्रिकाएँ और सोशल मीडिया एकजुट होकर इस दिशा में प्रयासरत हो तो इस आन्दोलन के सकारात्मक परिणामों से हमारा समाज व राष्ट्र सहज में लाभान्वित हो सकता है । अतः हमारा इन सभी नियामक इकाइयों से अनुरोध रहेगा कि एक सशक्त मंच बनाकर, योजनाबद्ध मार्ग अपनाकर इस आन्दोलन को सफल बनाएँ ।

दूध का कर्ज

-राजेन्द्र प्रसाद मुजफ्फरपुर

कत्लखाने के बाहर खूटे में वंधी प्रक गाय ने पास खड़े अपने वछड़े से कहा कि वेटा आज रात में तू हमारी जितनी दूध पीना चाहे पी ले, क्योंकि कल सूर्योदय के साथ ही कसाई मेरी हत्या कर मेरे शरीर को टुकड़े-टुकड़े कर उसे डिव्वे में भरकर विदेश भेज देंगे ।

इतना युनकर वछड़े ने अपनी माँ से कहा कि माँ आखिर वे ऐसा क्यों करेगें जबकि तुमने तो अपना दूध उन्हे पिलाया है ?

इय पर गाय ने जवाव दिया हाँ हमने तो अपना दूध सवों को विना भेद भाव के दिलाया है, उस कसाई को भी जो कल शुवह हमारा कत्ल करेंगे । मेरा दूध पीकर ही वे बल, विघा बुद्धि और शक्ति अर्जित कर पाये है, पर वेटा वे मनुष्य है उन्हे मनुष्य इसलिए कहा गया है क्योंकि वे मननशील है, पर उनमें अब मनन करने की शक्ति ही समाप्त हो गई है इसलिए वे कुछ भी कर सकतें हैं ।

इतना सुनकर वछड़े ने कहा कि क्या इसीलिए वे मुझे भी यहाँ लायें है, उन्हे हमारे बचपना पर भी कुछ तरस नही आया, में तो तैयार हो रहा था हल चलाकर उनके खेतों को फसलों से लहलहाने को ।

तव गाय ने कहा कि बेटा उसके कई कारण है पहला कारण तो यह है कि अब उन्हें खेती में तुम्हारी जरुरत नहीं रह गई है क्योंकि तुम्हारा स्थान ट्रेक्टर ने ले लिया है और दूसरा कारण यह है कि वे तुम्हारे कोमल और मुलायम चमड़े से क्रुम के जूते बनाकर अधिक मुनाफा अर्जित करेंगे और तीसरा एवं सवसे बड़ा कारण यह कि तुम बछड़ी नही बछड़ा हो अगर तुम बछड़ी होते तो वे तुम्हे हरगिज यहाँ नहीं भेजते बलकि बड़े ही लाड़ प्यार से तुम्हे पालते ताकि तुम्हारे दूध और बच्चे से लम्बे समय तक वे व्यापार कर सकें, क्योंकि वे बहुत ही स्वार्थी है इसलिए चन्द पैसो की लालच में तुम्हे भी यहाँ मिजवा दियें है ।

तव बछड़े ने निराश होकर पूछा माँ क्या हमारी कोई सुनने वाला नहीं है ?

तव गाय में कहा कि नहीं हमारी कोई सुनने वाला नहीं है क्योकि मानवाधिकार आयोग जैसा हमारा कोई आयोग नहीं है और न तो कोई न्यायलय ही ऐसा है जहाँ हम अपनी फरियाद कर सके । हां एक नयायलय ऐसा जरुर है जहाँ हमारी फरियाद भी सुनी जायगी और दोषी दंडित भी किये जायेगे । तव बछड़े ने एक वार फिर पूछा कि अच्छा यह तो बताओं कि क्या इसका दुष्परिणाम उन्हें कुछ भी नहीं मिलता ?

इस पर गाय ने कहा कि दुष्परिणाम मिलता क्यों नहीं अवश्य ही मिलता है । दुनिया के सभी प्राणी अपनी-अपनी स्वाभाविक आहार ही खाते है दूसरा कुछ भी नहीं, पर एक पात्र मनुष्य ही है जो अपने स्वाभाविक आहार के अलावा बड़ी तेजी से माँसाहार की ओर प्रवृत हो रहा है, हम तो केवल एकवार कत्ल किये जायेगे पर उन्हें तो लम्वे समय तक नरक जैसी यातना भोगनी पड़ रही है ।

आज का मनुष्य मुर्गियों का खुन पीकर अपना खुन वढ़ाना चाहता हैं एवं हम जैसे जानवरों के मांस को खाकर अपनी ताकत बढ़ाना चाहता है, पर उन्हें मिलता क्या है इन्हीं सब चीजों की खाकर वे नित नये - नये रोगों से ग्रसित हो जाते है और अल्प आयु में मृत्यु का भी ग्रास वन जाते है, वेद ने मनुष्य को १०० वर्ष जीने का अधिकार दिया है पर प्रकृति के विरुद्ध आचरशा करने से वे कम समय तक ही जी पाते है । आज स्थिति क्या है स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन को मूल आधार है शाकाहार पर वे जिस तेजी से माँस - भक्षण करके नये-नये बीमारीयों के चपेट में आ रहे हैं उन्ही से सारे हॉस्पीटल पड़े पटे पड़े है, प्राइवेट डाक्टरों के यहाँ उनकी लम्बी लाइन लगी हुई है और इससे बहुत ज्यादा संख्या में एवं अपने घरों में रोग शय्या पर पड़े - पड़े मृत्यु का वाट जोह रहे है । विश्व स्वास्थ संगठन () ने भी चेतावनी दिया है कि मनुष्य के शरीर में होने वाली बीमारीयों में से १५९ गंभीर बीमारीयाँ ऐसी है जिसका कारण है माँसाहार । हमारे बहुत बड़े पैमाने पर हत्या होने के वजह से उनके बच्चे दूध के बिना विलख रहे है, और कुपोपण के शिकार हो रहे हैं । आज पुरे विश्व में भूख और कुपोषण के वजह से उनके ५ वर्ष तक के बच्चों की मृत्यु ४०,००० प्रतिदिन हो रही है । फिर भी (W.H.O.) की इस चेतावनी का भी उनपर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है आखिर क्यों ? मतलव साफ है चाहे जो भी भोगना पड़े पर वे अपने लाइफ स्टाइल में कोई परिवर्तन नहीं चाहते ।

तव बछड़े ने अपनी माँ से पूछा कि इतना सव कुछ देखकर भी तुम्हें उनसे शिकायत नहीं है ?

तव गाय ने जवाव दिया कि नहीं मुझे उन पर तरस अवश्य आती है पर कोई शिकायत नहीं है क्योंकि मैं गोमाता हूँ विधाता ने मुझे विश्व माता का दर्जा दिया है इसिलिए मैं मरकर भी उनका कल्याण चाहती हूँ । जव वे औलाद की हत्या वेझिझक कर सकते है तो कुछ भी कर सकते है । आज प्रतिदिन लाखों की संख्या में वे अपने संतान की हत्या बिना जन्म लिये ही गर्भ में ही कर देते है तो फिर भला में कौन हूँ ।

हाँ, मुझे शिकायत है अपने उन कथित गो-भक्तों से जो गौ माता की जय जैसे- नारों से पुरे वातावरण को गुजंयमान करते है, मन्दिरों में स्थापित मेरी मूर्तियों पर अक्षत और फूल चढ़ाने से नहीं थकते, वें भी मुझे कत्लखानों तक मिजवानें में नहीं हिच किचातें । क्या यही है मेरा दूध का कर्ज जिसे वे इस प्रकार चुक्ता कर रहे हैं ।

ये कहाँ आ गए हम

-राजेन्द्र प्रसाद मुजफ्फरपुर

२ फरवरी १८३५ को एक ब्रिटिश सांसद लार्ड मेकाले ने ब्रिटिश संसद में एक वक्तव्य दिया था जो इस प्रकार हैं......

मैने पुरे भारतवर्ष में चारो ओर भ्रमण किया है और अपने इस भ्रमण काल के दौरान हमने एक भी व्यक्ति ऐसा देखा नहीं जो भिखारी अथवा चोर हो, इस देश में इतनी सम्पदा है, और लोगों का चरित्र इतना ऊँचा है और लोगों में इतनी योग्यता है कि मैं नहीं समझता कि इन्हें गुलाम बनायें रखा जा सकता है, जबतक कि इस देश की रीढ़ की हड्डी को तोड़ नहीं दिया जाय, जो इस देश की अध्यात्मिक व पैतृक सम्पति है और इसलिए मैं प्रस्ताव रखता हूँ कि इनकी प्राचीन शिक्षा प्रणाली एवं इनकी संस्कृति को बदल दें ताकि वे सोचने लगे कि जो कुछ विदेशी है वह हमसे अधिक महान है । इस प्रकार वे अपना स्वाभाविक संस्कृति और स्वाभिमान को खो देंगे और सचमुच हमारी इच्छानुसार हमारे गुलाम बने रहेंगे ।

आज सचमुच हमारा स्वाभिमान और हमारी वैदिक संस्कृति को नष्ट कर हमारी रीढ़ की हड्डी को तोड डाला गया है, अपने इसी उदेश्य की पूर्ति में वें बहुत पहले से कार्यरत थे । १७६० ई० में एक अंग्रेज अफसर लार्ड क्लाइव ने कलकता में गायों की हत्या हेतू एक कत्लखाना खुलवाया, जबकि मुगल शासन काल में भी इस देश में जो हत्या नहीं होती थी । इस एक कत्लखाने से बढ़कर अंग्रेजो के शासनकाल में ३०० कत्लखाने खुल गए और आज जब अपनी सरकार है तो इस समय इस देश में लगभग ३६००० कत्लखाने है । एक आकलन के मुताबिक भारत में प्रतिवर्ष लगभग १ करोड़ गायों की हत्या की जा रहीं है । भारतवर्ष इस समय एक प्रमुख गौ मांस निर्यातक देश बनकर ढेरों विदेशी मुद्रायें अर्जित कर रहा है ।

इतना की नहीं रावर्ट क्लाइव ने हमारा नैतिक पतन के उद्देश्य से पहली बार कलकता में ही एक विदेशी शराब की दुकान खुलवाया । इसके पहले अंग्रेज ही सिर्फ अपने लिए इसे बाहर से मँगवाते थे । इस समय इस देश में लगभग ३-४ लाख अंग्रजी शराब की दुकानें है जिससें करोड़ों लोग शराव पीकर अपना जीवन एवं जवानी दोनों ही वर्बाद कर रहें है । इस शराब के चक्कर में लाखों घर बर्बाद हो चुका है । एक आकलन के मुताबिक इस देश में प्रतिवर्ष । १ लाख ४० हजार लोग सड़क दुर्घटनाओं से मारे जाते है जिसका मुख्य कारण होता है शराब ।

अंग्रेज ने हमारी नैतिक पतन के खातिर एक काम और किया और वह है कलकता में ही एक वेश्यालय की स्थापना की और जबरन ३०० महिलायें को इस घृणित कार्य में ढ़केला । आज वेश्यावृति का स्वरूप इतना विशाल हो गया है कि इस देश का प्रायः सभी शहर वेश्याओं की मंडी से पट गया है । आज लाखों की संख्या में ये वेश्याएँ में लोगों को यौन रोगी बनाकर असमय ही मृत्यु की ओर घकेल रही है ।

कहने को तो हम आज स्वतंत्र है स्वतंत्र का मतलब होता है । स्वः तंत्र अर्थात अपना तंत्र मगर यहाँ अपना कुछ भी नहीं है सब विदेशी है । आज हमें स्वतंत्र हम ७० साल हो चुके है पर हम अपनी चीजें नहीं ला सकें है । अस्पताल हमारे है, डॉक्टर भी हमारे है पर दवा विदेशी है । कोर्ट हमारे, जज भी हमारे ही है पर कानून विदेशी है जहाँ फैसले तो होते है मगर न्याय नहीं होता हैं । इसी प्रकार विद्यालय हमारे है, शिक्षक भी हमारे है पर शिक्षा प्रणाली वही लार्ड मेकाले की विदेशी है ।

और सबसे ज्यादा हमारी संस्कृति को बर्वाद किया है वही लार्ड मेकाले की शिक्षा पद्यति इसी का परिणाम है कि बेटा बाप को आज बाप नहीं समझता । बेटा आज बाप को डैडी और फिर डैड कहता है उसी प्रकार माता को माँ नहीं ममी और फिर मम कहता है । माता और पिता शब्द में जों आत्मीयता है व मम और डैड में कहाँ । इस शिक्षा प्रणाली का ही परिणाम है कि आज परिवार टूट रहा है, रिस्ते नाते विखर रहे है ।

आज किसी महिला को बहन जी या श्रीमति जी के सम्बोधन से अधिक प्रिय लगता है मैडम के सम्बोधन से इसी प्रकार पुरुष महाशय ही के सम्बोधन से प्रिय लगता है सर के सम्बोधन से, अभिवादन का स्वरूप भी बिल्कुल बदल गया है ।

पश्चात् संस्कृति के चकाचौध में उसी का नकल करके आज युवतियाँ मार्यादा को ताक पर रखकर फैशन के नाम पर उतेजक और भड़काऊ कपड़े पहनकर अपने को अधिक माडर्न समझती है । इन्हें भारतीय संस्कृति को परिचायक शालीनता का प्रतिक पारंपरिक परिधान साड़ी रास नहीं आता है । दुपट्टे की तो आवश्यकता ही नहीं रह गया है । स्कर्ट की लम्बाई भी दिन-प्रतिदीन घटती जा रही है । यह सब इस ओर ईसारा करती है आखिर कहाँ आ गए हम । इसी प्रकार विदेशी तर्ज पर कला के नाम पर खुलेआम अश्लीलता का प्रदर्शन हो रहा है, टी.वी. चैनल और सिनेमा ने पुरे समाज का वातावरण ही अत्यंत बिशैला बना दिया है ।

आज हमारे युवा वर्ग में लव का नशा भी प्रत्येक घर तक पहूँच गया है जिसकी खबरों से अखबार का पन्ना भरा रहता है । लव का दुषपरिणाम जनना हो तो उन हजारों कुवारी माँओं से पूँछिए जिसने कभी लव किया था, लव के चक्कर में ही आज हजारों हजार युवतियाँ डाईभोर्स लेकर परित्यकता का जीवन जी रही है, और असफल प्रेम के चक्कर में हजारों हजार युवतियां अपने प्राण गवाँ चुकी है, यह लव और डाईभोर्स भी तो विदेशीयों का देन हैं हमारी संस्कृति में तो जीवन पर्यत्न साथ निभानें का नाम है प्रेम बंधन ।

अतः मैं यह कहना चाहुँगा कि इस लेख को लिखने का हमारा उद्देश्य मात्र इतना है कि विदेशी संस्कृति के फैलते इस नेटवर्क को उखाड़ फेकेने के लिए केवल एक ही रास्ता है कि पुरे देश में गुरुकुलीय शिक्षा का जाल फैलाकर बच्चों को हम शिक्षित ही नहीं दीक्षित भी करें ।

इस कार्य के लिए सरकार तो नहीं पर स्वामी रामदेव ने बीड़ा उठाया है, उन्होंने संकल्प किया है कि इस देश के प्रत्येक जिला में एक आचार्यकुलम (गुरुकुल) खोला जाएगा । जिसमें आधुनिक शिक्षा के साथ ही वेद शास्त्र इत्यादि ग्रन्थों का ज्ञान दिया जाएगा । स्वामी रामदेव का यह प्रयास स्वागत योग्य है क्योंकि इससे इस देश की दशा और दिशा बदलने वाली है ।

'मनुष्य किसकी उपासना और ध्यान करे?'

—मनमोहन कुमार आर्य,

हम मनुष्य है जिन्हें ईश्वर से बुद्धि प्राप्त हुई है। बुद्धि ज्ञान को धारण करती है। यदि बुद्धि में ज्ञान नहीं है तो वह अशुद्ध बुद्धि है और यदि उसमें सत्य ज्ञान है तो वह शुद्ध बुद्धि होती है। ज्ञान की प्राप्ति कर बुद्धि से ही सत्य व असत्य का निश्चय किया करते हैं। यह संसार किसने बनाया का यथार्थ ज्ञान हमें वेदों के अध्ययन से प्राप्त होता है। यदि हम वेदों से इतर संसार के ग्रन्थों को पढ़ेंगे तो हम असत्य में झुक कर भटक सकते हैं व भटकते ही हैं ऐसा हम सर्वत्र देख रहे हैं। अतः किसी आर्य परिवार में जन्म लेकर वेदों का अध्ययन कर संसार का कोई भी मनुष्य ईश्वर के सत्य वा यथार्थ स्वरुप का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। ईश्वर का ज्ञान प्राप्त हो जाने पर मनुष्य को निश्चय होता है कि ईश्वर सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी होने से हर क्षण और हर पल मेरे साथ रहता है। मनुष्य को यह शरीर व इसकी समस्त इन्द्रियां उसीं एक सृष्टिकर्ता परमेश्वर से ही मिली हुई हैं। अतः सभी मनुष्यों का प्रथम उपासनीय ईश्वर ही सिद्ध होता है। जन्म से पूर्व जब वह माता–पिता के पास नहीं आया था तो वह आकाश में था। उस समय न तो पूर्व जन्म के परिवार के लोग और न इस जन्म के उसके भावी माता–पिता आदि उसके साथ होते हैं। उस समय केवल एक सत्ता ही उसके साथ होती है जिसका नाम ईश्वर व परमात्मा है। वही जीवात्मा के पूर्वजन्म के शरीर से जो तब किन्हीं कारणों से उसके रहने योग्य नहीं था, बाहर निकालता है और उसे उसके कर्मानुसार इस जन्म के माता–पिता का निर्धारण कर उनसे जन्म दिलाता है। अतः माता–पिता व समाज के अन्य सदस्य, संबंधी, मित्र व समाज के लोग उसके उपासनीय व साथी बन जाते हैं। यह सभी संबंधी उसके होकर भी इस जन्म में हर समय उसके साथ रहने वाले नहीं होते। जब मनुष्य बालक होता है तो माता–पिता व परिवार के लोगों के साथ घर पर होता है। बड़ा होने पर उसे अनेक परिस्थितियों में अपने पारिवारिक व मित्र जनों से भी दूर जाना पड़ता है जहां उसके नये मित्र, साथी व उपासनीयजन होते हैं। पुराने उपासनीय जन दूर होकर अब उपासनीय नहीं होते और नये लोग उपासनीय वा समीप आते हैं। अतः यह ज्ञान होता है कि ईश्वर के सम्बन्ध अस्थाई व अल्पकालिक हैं। शरीर छूटने के बाद सभी आपसी सम्बन्ध भी छूट जाते हैं।

> ईश्वर का ज्ञान प्राप्त हो जाने पर मनुष्य को निश्चय होता है कि ईश्वर सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी होने से हर क्षण और हर पल मेरे साथ रहता है।

ईश्वर और जीवात्मा अनादि, नित्य, अनुत्पन्न, अविनाशी, अमर, अजर, परस्पर शाश्वत, सनातन मित्र व सखा हैं। ईश्वर सर्वव्यापक है तो जीवात्मा व्याप्य है। इसी कारण जीवात्मा और ईश्वर का परस्पर व्याप्य–व्यापक नित्य व स्थाई सम्बन्ध है। ईश्वर मनुष्य को उसके कर्मानुसार उसे सुख प्रदान करने के लिए अनेक प्रकार के शरीरों में से एक शरीर देता है जिससे वह सुख प्राप्त करता



है। इस कारण मनुष्य वा उसका जीवात्मा ईश्वर का ऋणी व कृतज्ञ भी होता है। अज्ञानता के साथ दोनों की परस्पर उपासना तो हर क्षण विद्यमान रहती है परन्तु जीवात्मा जब एकान्त स्थान में मन को सांसारिक विषयों से हटाकर ईश्वर के गुणों व स्वरुप को जानकर उसका गुण–कीर्तन अर्थात् स्तुति–प्रार्थना–उपासना सहित ध्यान करता है उसी को अन्य लोगों व पदार्थों की उपासना से मनुष्यों को क्षणिक व तात्कालिक लाभ के साथ दूरगामी दृष्टि से हानि भी होती है। मनुष्य माता–पिता व परिवार जनों की निकटता प्राप्त करता है तो एक दिन उनमें से किसी की मृत्यु होने पर वह उससे वंचित हो जाता है। अब उसे सुख के स्थान पर वियोग की असहनीय पीड़ा व दुःख से गुजरना होता है। भौतिक पदार्थों की उपासना अर्थात् भोग से शरीर निर्बल व रोगी होता है जिससे उसे दुःख होता है और कुछ समय बाद मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। मृत्यु का दुःख अभिनिवेश क्लेष कहलाता है जो कि संसार का सबसे भयंकर दुःख है। यह सांसारिक पदार्थों की उपासना व संगति का ही परिणाम होता है। अतः यह सिद्ध होता है कि हमें अपने परिवारजनों व मित्रों की उपासना व संगति तो करनी है परन्तु ईश्वर को स्मरण रखते हुए प्रातः व सायं उसका गुणगान व स्तुति–प्रार्थना आदि भी करनी है जिससे हमारा वर्तमान व भविष्य सुधर सके। ईश्वर की उपासना अर्थात् उसके निकट आसन जमाना या बैठना ही ईश्वर की उपासना होती है। इससे लाभ ही लाभ है और हानि कुछ नहीं है। अतः हमें ईश्वर की नियमित उपासना अवश्य करनी चाहिये। यही कारण है कि हमारे महान बुद्धिमान व मेधा के धनी श्री राम, श्री कृष्ण, महर्षि दयानन्द और अन्य सभी ऋषि–मुनि, विद्वान व योगी सादा व सरल जीवन व्यतीत करते थे और अपना अधिक से अधिक समय ईश्वर की उपासना अर्थात् उसकी स्तुति प्रार्थना व उपासना एवं ध्यान आदि में लगा कर ईश्वर का साक्षात्कार करने का प्रयत्न करते थे।

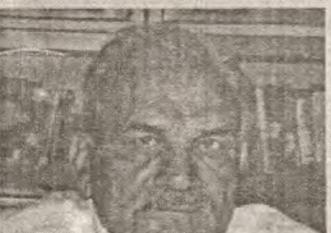
ईश्वर के निकट बैठने को उपासना कहते हैं। ईश्वर के निकट क्यों बैठें और उसका गुणगान क्यों करें? इसका उत्तर है कि हम जब भी किसी से लाभान्वित होते हैं तो उसे धन्यवाद कहते हैं। ईश्वर से हमें यह सृष्टि, इसके समस्त पदार्थ, हमारा शरीर, शरीर में बहुमूल्य आंखे, नाक, कान, मुंह, हृदय, फेफड़े, यकृत, सिर, हाथ, पैर और शरीर के अन्दर अनेकानेक बहुमूल्य उपकरण आदि मिले हैं। यदि एक ही उपकरण खराब हो जाये तो कई बार अपना समस्त धन व्यय करने पर भी हम उसे डाक्टरों से ठीक नहीं करा पाते और मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं। ईश्वर ने हमें यह हमारा

अतिरिक्त मनुष्य व जीवात्मा के सभी साथी अस्थाई साथी होते हैं। मृत्यु के बाद सभी एक दूसरे से बिछुड़ जाते हैं और मृतक को कुछ ही दिनों में भुला भी देते हैं। अतः पारिवारिक व मित्रों की उपासना व संगति दीर्घकालिक सुख प्रदान नहीं करती। परिवार का कोई सदस्य कुछ ही समय बाद मृतक के लिए दुःख नहीं करता क्योंकि हमारा परस्पर सम्बन्ध शरीर का होता है, आत्मा का नहीं। आत्मा का स्थाई संबंध तो केवल परमात्मा से ही है व अन्य सभी उपासना कहा जाता है। यह उपासना अन्य सांसारिक संबधियों व पदार्थों से भिन्न व सर्वाधिक लाभकारी होती है। इस उपासना से मनुष्य के सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यस्न और दुःख दूर होकर जीवात्मा को कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव व पदार्थों की प्राप्ति होती है। यह बात काल्पनिक नहीं अपितु वेदादि शास्त्रों में वर्णित एवं तर्क व युक्तियों से सिद्ध तथ्य है। यह जो लाभ होता है वह ईश्वर से अन्य किसी मनुष्य व भौतिक पदार्थ की उपासना व संगति से प्राप्त नहीं होता। शरीर व इसका प्रत्येक अवयव स्वस्थ अवस्था में बिना किसी शुल्क के दिया है। क्या हमारा कर्तव्य नहीं बनता कि ईश्वर के इस महादान के लिए हम उसका प्रातः व सायं विधिपूर्वक सन्ध्या व ध्यान के द्वारा धन्यवाद करें? इस प्रकार की ईश्वर की उपासना सबको अवश्य ही करनी चाहिये परन्तु हम सब ऐसा करते नहीं हैं। यही कारण है कि हम जीवन में समस्याओं से ग्रस्त व तनाव ग्रस्त भी रहते हैं। यदि हमें अपने कर्तव्यों का बोध हो और आलस्य व प्रमाद वश हम कर्तव्य का पालन नहीं करते तो हमें दुःख व क्लेश होता है। ऐसा ही क्लेश ईश्वर का भली प्रकार से ध्यान व गुण–कीर्तन न करने से भी होता है। अतः कृतज्ञता के कारण ईश्वर के प्रति धन्यवाद करना ही उसकी उपासना व भक्ति है जो सबको वेदानुसार यथाविधि प्रतिदिन दोनों समय करनी चाहिये।

महर्षि दयानन्द 19वीं शताब्दी के सबसे बड़े वेद और धर्म के ज्ञानी महापुरुष थे। उन्होंने जीवन की हर बात को सत्य की कसौटी पर कस कर ही स्वीकार किया। उनके बाद आज तक कोई उनके समान व अधिक ज्ञानी उत्पन्न नहीं हुआ। महाभारत काल के बाद भी उन जैसा ज्ञानी, ध्यानी, ईश्वरोपासक, समाज सुधारक, वेद भक्त, देशभक्त, गौभक्त, मानव सहित प्राणीमात्र का हितैषी अन्य मनुष्य संसार में नहीं जन्मा। उन्होंने देश व विश्व के कल्याण के लिए सत्य मान्यताओं का ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश हमें दिया है। सभी मनुष्यों को उसका अध्ययन करना चाहिये और उनके बताये हुए मार्ग पर चलना चाहिये जो मनुष्य को उन्नति के शिखर अभ्युदय व निःश्रेयस पर ले जाता है। वेदाचरण की ईश्वर उपासना में अहम् भूमिका है। अतः संसार में एक सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सच्चिदानन्दस्वरुप, सर्वशक्तिमान, जीवात्मा का उसके हर जन्म का साथी ईश्वर ही उपासनीय व ध्यान करने योग्य सिद्ध होता है। आईये, ईश्वर प्रदत्त वेद विधि से उसकी उपासना का व्रत लें और जीवन को सफल बनायें। इति।

— पता: 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोन:09412985121

दिल्ली के प्रसिद्ध आर्यनेता डॉ. ओम् प्रकाश मान का निधन



पैतृक गांव खेड़ा खुर्द (दिल्ली) में वैदिक रीति से हुई अन्त्येष्टि आर्य समाज शालीमार बाग (पश्चिम) के प्रधान व प्रसिद्ध आर्य नेता डॉ. ओम प्रकाश मान का 28 सितम्बर, 2016 को प्रातः असामयिक निधन हो गया। वे 70 वर्ष के थे। डॉ. मान के देहावसान के समाचार से आर्य समाज में शोक की लहर फैल गई। उनके देहावसान से आर्य समाज का एक मजबूत स्तम्भ गिर गया। आर्य समाज की विचारधारा से बचपन से ही जुड़े डॉ. मान एक समर्पित योद्धा थे। आर्य समाज के लिए वे सदैव तन, मन, धन से कार्य करते थे तथा विकट से विकट परिस्थितियों में भी वे अडिग रहते थे। डॉ. मान आर्य समाज के लौहपुरुष थे। उनके जाने से आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। उनकी अन्त्येष्टि उनके पैतृक गांव खेड़ा खुर्द में पूर्ण वैदिक रीति से की गई।

गुरुकुल खेड़ा खुर्द के आचार्य सुधांशु जी ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों सहित उपस्थित रहकर अन्त्येष्टि संस्कार पूरा करवाया। डॉ. मान के पार्थिव शरीर को मुखाग्नि उनके पुत्र श्री अमित मान ने नम आंखों से दी। अन्त्येष्टि में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान डॉ. अनिल आर्य, सभा के उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश, डॉ. धर्मवीर आर्य, श्री संजीव आर्य, श्री अरुण आर्य मंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली प्रान्त, श्री धमेन्द्र कुमार, मेट्रोपोलीटन मजिस्ट्रेट श्री ओम सपरा सहित अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। अन्त्येष्टि के पश्चात् सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने डॉ. मान को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि डॉ. ओम प्रकाश मान का निधन पूरे आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति है। उन्होंने शोकाकुल परिजनों का भी ढांढस बंधाया तथा अपनी सान्त्वना प्रेषित की। डॉ. मान की श्रद्धांजलि सभा एवं शांति यज्ञ 9 अक्टूबर, 2016 (रविवार) को आर्य समाज शालीमार बाग (पश्चिम) जे. बी., नई दिल्ली में सायं 3 से 5 बजे तक होगी।

— दीक्षेन्द्र आर्य

गाय की चर्बी से पितृयज्ञ ?

सरिता के लेखक ने यजुर्वेद के निम्न लिखित मन्त्र का महीधर-भाष्य देते हुए गाय की चर्बी से पितरों को तृप्त करने और परिणामस्वरूप कामनाएँ पूरी होने की बात कही है-

वह वपां जातवेदः पितृभ्यो यत्रैनान् वेत्थ निहितान् पराके । मेदसः कुल्या उप तान्त्स्रवन्तु सत्या एषामाशिषः सन्नमन्ता स्वाहा ।। -यजु० ३५.२०

स्वामी दयानन्द ने इस मन्त्र के भाष्य में 'वपा' का अर्थ भूमि, 'पितृ' का अर्थ पिता-माता व विद्या की शिक्षा देनेवाले विद्वान् और 'मेदसः कुल्याः' का अर्थ पानी की स्निग्ध नहरें किया है-

वपाम् वपन्ति यस्यां भूमौ ताम् । पितृभ्यः जनकेभ्यो विद्याशिक्षा-दातृभ्यो वा, मेदसः स्निग्धाः । कुल्याः जलप्रवाहधाराः । अभिप्राय यह होगा कि हे ज्ञानी राजन् आप श्रेष्ठ विद्वानों को खेती-योग्य भूमि प्राप्त कराइये, जहाँ आप इन्हें दूर-दूर बसा हुआ जानते हैं। सिंचाई के लिए पानी की नहरें भी इनके निकट पहुँचे, जिससे इनकी सदिच्छाएँ पूर्ण हों ।

यहाँ पितरों के लिए अग्नि में चर्बी की आहुति देने का अर्थ असंगत है, क्योंकि पितरों का भोजन तो 'स्वधा' (अन्न) है, न कि चर्बी । देखिए, **''पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः''** (यजु० १९.३६) पर महीधर का ही भाष्य-

पितृभ्यः स्वधासंज्ञकं नमः अन्नम् अस्तु 'स्वधा वै पितृणाम् अन्नम्' इति श्रुतेः । यद्वा पितृभ्यः स्वधा अन्नम् अस्तु, तेभ्यो नमस्कारश्चास्तु । कीदृशेभ्यः ? स्वधायिभ्यः स्वधाम् अन्नं प्रति यन्ति गच्छन्तीत्येवंशीलाः स्वधायिनः तेभ्यः ।

गोवध की उपमा

लेखक लिखता है कि ''ऋग्वेद मण्डल १०, सूक्त ८९, मन्त्र १४ से स्पष्ट होता है कि गोहत्या ऐसी मामूली बात थी कि बातचीत में उपमा के तौर पर इसका प्रयोग होता था। देखिए, **मित्रक्रुवो यच्छसने न गावः पृथिव्या आपृगमुया शयन्ते ।** अर्थात्, हे इन्द्र जैसे गोहत्या के स्थान पर गौएँ काटी जाती हैं, वैसे ही तुम्हारे इस अस्त्र से मित्रद्वेषी राक्षस लोग कट कर पृथ्वी पर सदा के लिए सो जाएँ ।''

जब शतशः प्रमाण वेदों में गोहत्या के विरोध में उपलब्ध हैं, तब जहाँ भी मौका मिले, जानबूझ कर गोहत्या-परक ही अर्थ करना वेद के प्रति न्याय नहीं कहा जा सकता । वस्तुतः यहाँ ऋग्वेद में पग-पग पर आने वाले इन्द्र-वृत्र-युद्ध की ओर संकेत है। वृत्र (बादल) इद्र की गौओं (सूर्य की किरणों) को अपने बाड़े में बन्द कर लेता है, जिससे वे पृथिवी पर नहीं आने पातीं । मन्त्रार्थ यह होगा कि बादल का वध (शासन) हो जाने पर सूर्य की किरणें जैसे पृथिवी पर आ जाती हैं, वैसे ही मित्रद्रोही शत्रु कट कर पृथिवी पर सो जाएँ ।

लेखक ने उपमा की ही बात उठायी है, तो गाय की निम्नलिखित उपमाओं पर ध्यान दीजिए और देखिए कि उनसे क्या सिद्ध होता है । **ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं गां न दोहसे हुवे** (ऋ०६.४५.७), मैं ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिए ब्रह्मा को पुकारता हूँ, जैसे दुहने के लिए गाय को पुकारते हैं । **'अक्षाः फलवतीं द्युवं दत्त क्षीरिणीमिव'** (अथर्व० ७.५०.९), जैसे दुधारु गाय दूध-रूप फल प्रदान करती है, ऐसे ही हे मेरी ज्ञानेन्द्रियो, तुम सफल ज्ञान मुझे प्रदान करो । एक और मन्त्र द्रष्टव्य है-

अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य संदृग् देवस्य चित्रतमा मर्त्येषु । शुचि घृतं न तप्तमघ्न्यायाः स्पार्हा देवस्य मंहनेव धेनोः ।।

-ऋ० ४.१.६

इस मन्त्र में सुभग अग्नि की सम्यक् दृष्टि (उत्तम देखभाल) मनुष्यों में कैसी स्पृहणीय है, यह बताने के लिए गोसम्बन्धी दो उपमाएँ उद्धतरार्ध मे दी गयी हैं । पहली उपमा यह है कि जैसे गाय का पवित्र घृत स्पृहणीय होता है, दूसरी यह कि जैसे गाय का दान स्पृहणीय होता है ।

क्या शवदाह में गोवध करें ?

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रकाशित 'वैदिक कोश' का हवाला देते हुए लेखक लिखता है कि ''शवदाह के लिए भी गोवध किया जाता था । ऋग्वेद १०.१६.७ में आता है-**'अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व संप्रोर्णुष्व पीवसा मेदसा च'**, अर्थात् हे मृत शरीर, तुम गोचर्म के साथ अग्निशिखास्वरूप कवच को धारण करो । तुम मेद और मांस से आच्छादित होओ ।''

यह अर्थ सायण का ही है, किन्तु मांस शब्द लेखक ने अपनी ओर से जोड़ दिया है या सायण और ग्रिफिथ दोनों के अर्थों को मिलाकर उक्त अर्थ तैयार किया है । मन्त्र में 'गोभिः' और 'पीवसा मेदसा' शब्द आये हैं । 'गोभिः' से सायण ने गोचर्म और ग्रिफिथ ने गोमांस या मारी हुई गाय के अंगों के टुकड़े अर्त लिया है । 'पीवसा मेदसा' शब्द आये हैं । 'गोभिः' से सायण ने गोचर्म और ग्रिफिथ ने गोमांस या मारी हुई गाय के अंगों के टुकड़े अर्थ लिया है । 'पीवसा मेदसा' का दोनों ने स्थूल मेद (चर्बी) अर्थ किया है । मन्त्र के पूर्वार्ध में वर्णित क्रिया किस लिए की जाए, इसका हेतु उत्तरार्ध में यह बताया है कि जिससे चिता की अग्नि शव के अंगों को इधर-उधर छिटकाये नहीं-**नेत् त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हषाणो दधृग् विधक्ष्यन् पर्यङ्खयाते** । इस हेतु को ध्यान में रखते हुए ही पूर्वार्ध का अर्थ करना होगा । पहले **'गोभिः'** शब्द को लीजिए । इसका अर्थ जीवित या मारी हुई पूरी गाय तो किसी ने नहीं किया, गव्य अर्थ ही लिया है, चाहे वह गोचर्म हो या गोमांस । 'गो' का एक अर्थ पृथिवी भी होता है, निघण्टु कोश में पठित पृथिवीवाची २१ नामों में सबसे पहला ही नाम 'गौ' है । पृथिवीरूप गौ के गव्य हैं मिट्टी के ढेले । चिता के चारों ओर मिट्टी के ढेले चुन दिये जाएँ, जिससे जलते हुए शव के अंग इधर-उधर छिटकें नहीं । अग्नि में गाय को काटकर डालने से यह प्रयोजन कैसे पूरा होगा, समझ में नहीं आता । एक मुर्दे को जलाने का भार अग्नि पर पहले ही है, दो-तीन मुर्दों के मांस को जलाने का भार और आ पड़ेगा ।

पृथिवी से उत्पन्न होने के कारण सुगन्धित कन्दमूल, वृक्षों की गोंद, पत्र-पु,ष्प, चन्दन आदि भी गव्य हैं । 'गोभिः' पद से शव को उनसे ढकना भी अभिप्रेत हो सकता है ।

मन्त्र में दूसरा शब्द **'पीवसा मेदसा'** है। 'पीवस्' का अर्थ स्थूल, प्रचुर आदि होता है। 'मेदस्' शब्द स्नेहार्थक मिद धातु से बना है। प्रसंगानुसार किसी भी स्नेहयुक्त द्रव्य को मेदस् कह सकते हैं । ऋ० ३.२१.१,४ में 'मेदस्' घृत के विशेषणरूप में आया है-**'मेदसो घृतस्य'** । जैसे अध्वर शब्द कहीं यज्ञ के विशेषणरूप में आता है, कहीं स्वतन्त्ररूप में साक्षात् यज्ञवाचकरूप में प्रयुक्त होता है, वैसे 'मेदस्' शब्द घृत का वाचक भी हो सकता है, अतः यहाँ 'पीवसा मेदसा' से प्रचुर घृत अभीष्ट होना चाहिए।

एवं वेद के उक्त मन्त्र से यह प्रेरणा लेनी उचित है कि शवदाह के समय चिता के चारों ओर कुछ दूरी पर मिट्टी के गारे से छोटी दीवार-सी बना दी जाए और प्रचुर सुगन्धित हवन सामग्री एवं घृत से शव को आच्छादित कर दें तथा घृत-सामग्री की आहुति भी डालें । अन्त्येष्टि संस्कार के मन्त्रों में अन्यत्र स्पष्ट ही कहा है- **'यमाय घृतवद्धविर्जुहोत', 'यमाय मधुमत्तमं राज्ञे हव्यं जुहोतन'** (ऋ० १०.१४.१४,१५) अर्थात् शवदाह के समय घृतयुक्त मधुमत्तम (मधुर, सुगन्धित) हवन- सामग्री की आहुति दो ।

భగవద్గీతోపన్యాసములు

పండిత గోపదేవ గారి ఉపన్యాసములను లేఖబద్ధం చేసిన
రచయిత : పండిత చెలవాది సోమయ్య





సాంఖ్యయోగం

సంజయ ఉవాచ :-

తం తథా కృపయా విష్ట మశ్రు పూర్ణాకు లేక్షణమ్ ।
విషీదంత మిదం వాక్యమువాచ మధుసూదనః॥

-గీత.2-1

అప్పుడు, దయతో కూడుకున్న వాడున్నూ, కండ్ల వెంట నీరు పెట్టుకొని దిగులు చెందుతూ ఉన్నటు వంటి అర్జునుణ్ణి చూచి కృష్ణుడిలా అన్నాడు.

శ్రీ భగవానువాచ :-

కుతస్త్వా కశ్మల మిదం విషమే సముపస్థితమ్।
అనార్యజుష్టమ స్వర్గ్యమకీర్తి కరమర్జున॥

గీత.2-2

అర్జునా ! ఎక్కడి నుండి వచ్చిందోయ్ నీకీ మనో మాలిన్యం ? అందులో సంకట సమయంలో వచ్చింది. ఒక వైపు శత్రువులు యుద్ధం చేద్దామా అని కాచుకొని కూర్చున్నారు. నీవేమో యిలా దుఃఖిస్తున్నావు ఇది నాకేమీ బాగుండలేదు. 'అనార్యజుష్టం' - ఇది 'ఆర్యులకు' తగని పని సుమా ! అస్వర్గ్యం - సుఖమిచ్చేది కాదు. పైగా నీకిది పేరు ప్రతిష్ఠలూ తేదు. అర్జునుడు పిరికివాడు గనుక తీరాయుద్ధ క్షేత్రానికి వచ్చి యుద్ధం చెయ్యకుండా మానుకున్నాడు అని లోకులనుకుంటారు కదా?

క్లైబ్యం మా స్మ గమః పార్థ నైతత్త్వయ్యుప పద్యతే।
క్షుద్రం హృదయ దౌర్బల్యం త్య క్త్వోత్తిష్ఠ పరంతప॥

గీత. 2-3

కాబట్టి పార్థ ! కుంతీ పుత్రుడవైన నీవు నపుంసకత్వం పొందకు. నీకిది తగదు. నీవు శత్రు తాపకుడవు. నీచమైన హృదయ దౌర్బల్యాన్ని విడిచి లే ! యుద్ధానికి సిద్ధపడు. నీవేం సామాన్యుడవా ? పరంతపుడవు - శత్రువులను తపింపజేస్తావు. నీపేరెత్తి తేనే శత్రువులు గడగడ లాడతారు ? అన్నాడు కృష్ణుడు.

నపుంసకత్వం అంటే మగవాళ్ళలో ఉండే ఆడంగితనం. ఆడంగిరేకుల వాళ్ళను మీరు చూచే ఉంటారు. వీళ్ళు మహమ్మదీయులు ఉండే చోట ఎక్కువగా ఉంటుంటారు. మీరు హైదరాబాదులో యిది చూస్తారు.

ఇచట మనమొక సంగతి గుర్తించాలి. ఈశ్లోకాలల్లో మనకొక పదం తగిలింది. **'అనార్యజుష్టం'** - ఇది ఆర్యులకు తగనిది అని. కృష్ణుడు అర్జునునితో 'ఈ మనోమాలిన్యం **ఆర్యులకు** తగనిది, నీకెట్లా వచ్చిందోయ్' అని అంటున్నాడు. దీనిని బట్టి మనకు కృష్ణార్జునులు ఆర్యులని తోస్తుంది.

మీరెవరు అంటే ఏం చెప్పాలి ? :-

ఇప్పుడు మనదేశంలో కోట్లాది ప్రజలున్నారు. అందులో కొందరు క్రైస్తవులని, కొందరు జైనులని, కొందరు బౌద్ధులని, కొందరు మహమ్మదీయులని చెప్పుకుంటుంటారు. మిగిలిన వారందరు తమ్ముతాము హిందువులమని చెప్పుకుంటుంటారు. నేను ఎక్కడికైనా యిలాగే ఉపన్యాసాలకు వెళుతుంటే ఒక ప్రశ్నవన్నడుగుతారు. మీరెవరు ? అని. ఏం, కనిపించడం లేదా ! నేను మనిషినే అంటా (సభలో నవ్వులు) కనిపిస్తుంది లెండి, అయినా తామెవరు ? అంటారు. మీపేరేమిటి అంటే చెప్పవచ్చు, మీదేవూరంటే చెప్పవచ్చు, మీరేంపని చేస్తారంటే చెప్పవచ్చు గాని మీరెవరంటే ఏం చెప్పాలి ? మీరెవరు అనే దానికి అర్థమేమిటి ? పోనీ నేను హిందువు నంటాననుకోండి, అయినా మీరెవరు ? అంటారు. వాళ్ళ ఉద్దేశ్యంలో, మీరే కులస్థులో చెప్పమని. బ్రాహ్మణుడో, చాకలో, జంగమో, రెడ్డో, కమ్మో ఏదో చెప్పాలి. వచ్చిన చిక్కది (సభలో చిరునవ్వులు) పోనీ మీరే కులస్థులని నేరుగా అడిగితే పీడావదులుతుంది గదా ? అట్లా అడగరు. సరే, నేను బ్రాహ్మణుడనని చెబుతాననుకోండి (నవ్వనభినయిస్తూ శ్రీగురుదేవులు) ఉఁహూఁహూఁ బ్రాహ్మలేలెండి కనిపిస్తున్నదిగా, మెడలో జంధ్యమది ఉంది, అయినా మీరెవ్వరు అంటారు (సభలో నవ్వులు) అలా అడగడంలో వాళ్ళ ఉద్దేశ్యం నేను వైదీకినో నియోగినో చెప్పాలని. పోనీ, నేను వైదీకి నన్నాకోండి, అయినా మీరెవరు అంటారు. అంటే వేగినాటి వారా, వెల్నాటి వారా, పల్నాటివారా ? మురికినాటి వారా (సభలో నవ్వులు) వీటిలో ఏదో చెప్పాలి. దయ్యమైనా వదిలిపెడుతుందేమో కాని మీరెవ్వరు ? అనే ప్రశ్న మాత్రం వదలదు సుమండి (గబుక్కున సభలో నవ్వులు) దయ్యాలు లేవనుకోండి.

ఒక సారి నేను కర్నూలు వెళ్ళి ఉపన్యసించడం జరిగింది. అక్కడి వైదిక, నియోగ పండితులు నా కులాన్ని సందేహించి తెలియగోరి విచారింపగా. అక్కడొక సాలీల యింటిలో ఉండి తింటుండేవాణ్ణి. ఈయన చూస్తే బ్రాహ్మణుడుగా ఉన్నాడు. కాని సాలెవారి యింట్లో తింటున్నాడు. సాలె వారికి ఈవిద్య ఎట్లా వస్తుంది ? రాదు. కనుక యీయన బ్రాహ్మణుడై ఉండాలి. అయితే నియోగియా లేక వైదీకా అనుకుంటూ ఇద్దరు బ్రాహ్మణులు నాదగ్గరకు వచ్చారు. నియోగి బ్రాహ్మణుడు నేను నియోగినని వైదీకి బ్రాహ్మణుడు నేను వైదీకినని పందాలు వేసికొని వచ్చారు. నన్ను 'మీరు వైదీకులా నియోగులా అని అడిగారు. నేను మనిషిని అన్నా. ఆమాట వారికి నచ్చలేదు. నేను ఆర్యసమాజకుణ్ణి, వైదిక ధర్మాలు ప్రచారం చేస్తుంటాను గనుక వైదిక మతస్థుణ్ణి అంత వరకు అయితే చెబుతానన్నా. అదీ వారికి నచ్చలేదు. మీకు కులం తెలిసికోవాలని ఉందా? అలాగయితే నేను హరిజనుణ్ణి పొమ్మన్నా (సభలో నవ్వులు). ఏం హరిజనుడు మాత్రం చదువుకోగూడదా ? పండితుడు కాకూడదా ?

క్రైస్తవుల్ని మీరెవరూ అంటే క్రైస్తవుడ నంటాడు. మహమ్మదీయులను మీరెవరు అంటే మహమ్మదీయులమంటారు. మీరెవరు

అన్నప్పుడు అలా మతం పేరు చెప్పడం కూడ తప్పే. మీ మతమేది అన్నప్పుడు మాత్రమే మతం చెప్పాలి. మీరెవరు ? అన్న ప్రశ్నకు సరియైన జవాబు చెప్పాలంటే వేం మనుష్యులం అని చెప్పాలి అంతే.

హిందువంటే ఎవరు :-

క్రైస్తవులకు మూలపురుషుడు క్రీస్తు. అతని ననుసరించే వాళ్ళు గనుక వారు క్రైస్తవులన బడతారు. మహమ్మదీయులకు మహమ్మదు ప్రవక్త. ఆయనను అనుసరించే వారు మహమ్మదీయులు. మరి మతరీత్యా మీరు హిందువులమని చెప్పుకుంటున్నారు గదా ? ఎందువల్ల మీరు హిందువులయినారు ? ఎవరైనా హిందువు అనేవాడు మీకు మూల పురుషుడున్నాడా ? అంటే, లేదు. మరి మీరు హిందువులు ఎలాగైనారు ? అని అడిగితే, ఇదేం ప్రశ్న, వింతగా ఉంది. వింత ప్రశ్న వేస్తున్నాడీయన అనుకుంటారు మీరు. ఇది వింత ప్రశ్నకాదు. తెలుసుకోదగిన ప్రశ్నే. నేను చరిత్ర పాఠాలు చెప్పే కాలేజీ లెక్చరర్లను 'హిందు' పదానికి అర్థమేమిటని అడుగు తుంటా. బుద్ధుడు, క్రీస్తు, మహమ్మదు వీళ్ళు చారిత్రక పురుషులు. బౌద్ధమతం, క్రైస్తవమతం, మహమ్మదీయ మతం స్థాపించారు. అలాగే హిందువు అనేవాడు ఎవరైనా, ఎక్కడైనా పుట్టి పెరిగి హిందుమతాన్ని స్థాపించాడా అని అడుగుతాను ఉహూ లేదండి అని వారు అంటారు. ఇది హిందూ దేశం కనుక హిందువులమయినా మంటే - హిందూ దేశంలో ఉన్న వాళ్ళంతా హిందువులని పిలువబడాలి కాని క్రైస్తవులు, మహమ్మదీయులు అలా పిలవబడానికి ఒప్పుకోరు. దేశాన్ని బట్టి మనకు హిందువు అని పేరు వస్తే, అది ఆదేశ వాసులందరికీ వర్తించాలి. చూడండి రష్యా దేశంలోని వాళ్ళంతా తాము ఏమతానికి చెందినా, రష్యనక్లమని చెప్పుకుంటారు. అలాగే జర్మన్లు, అమరికన్లు వారి మతాలేవైనా తమ్ముతాము జర్మన్లని, అమెరికన్లని దేశం పేరుతో చెప్పుకుంటుంటారు. అలాగే యిది హిందూ దేశమయినప్పుడు ఈ దేశంలోని క్రైస్తవులు, మహమ్మదీయులు కూడ తమ్ము తాము హిదువులమని ఎందువల్ల చెప్పుకోరు? కారణమేమి ? అని అడిగితే జవాబుండదు. కనుక హిందూ దేశాన్ని బట్టి మనకు హిందువుల మనే పేరు రాలేదనేది స్పష్టం.

దేశానికి హిందూ శమని పేరుందా ? వేదాలు, ఉపనిత్తులు, రామాయణ భారతం మొదలైన ప్రాచీన గ్రంథాలల్లో హిందు, హిందూదేశ పదాలు లేవు. చరిత్రకారులు చెపేపదేమంటే, పార్శీవాళ్ళు మొదట మన దేశంలో సింధునది ప్రాంతానికి వచ్చారని దాన్ని వాళ్ళు సింధుదేశమని అనలేక హిందుదేశ మన్నారని అప్పటి నుండి మన దేశాన్ని హిందు దేశమన్నారని చెబుతుంటారు. పార్శీలు సింధూదేశాన్ని హిందూదేశమని ఎందు కన్నారు? అని అంటే, దానికి వారు చెప్పే సమాధానం యిది. పార్శీభాషలో 'స' కారానికి 'హ' కారం పలుకుతారు. సప్తాహం అనడానికి బదులు హాప్తాహం అంటారు. అందుచేత పార్శీలు సింధూదేశాన్ని హిందూదేశం అన్నారు అని అంటారు. ఇది కూడ నరికాదు. పార్శీభాషలో ఒక మాట ఉంది. దస్త్ + ఖత్ = అంటే చేవ్రాలు అని అర్థం. దాన్నే మన తెలుగులో 'దస్కత్, దస్కత్' అంటుంటాం. ఈ దస్ఖత్ పదంలో 'స' కారం ఉన్నది. మరి ద దస్ ఖత్ లో 'స' కారం పలకగా లేనిది సింధూ దేశం అనే పదంలో 'స' కారం ఎందుకు పలకలేరు ? కనుక పార్శీలు 'స' కారానికి 'హ' కారం పలికినందువల్ల ఈ దేశానికి హిందూ దేశమని పేరు వచ్చింది. అనే వాదం సరియైనది కాదు. సంస్కృతంలోని 'సప్తాహం' అనుపదం పార్శీలో 'హప్తాహం' గా మారింది అంతేకాని ప్రతిసకారానికి హకారం వాడాలని నియమం లేదు. పార్శీకులు సింధుదేశం అనలేక హిందూదేశం అంటే మనం ఎందుకు దాన్ని అంగీకరించాలి ? పోనీ ఈ దేశాన్ని మనపూర్వులు సింధుదేశమని పిలిచినట్లు ప్రమాణమేమి. పార్శీలు మనదేశం రాక పూర్వం మన దేశానికి ఉన్న పేరేమిటి ? సింధుదేశమని ఉన్నదా ? అప్పుడు మన దేశానికి పేరేమీ లేదా ? లేకుండా ఎందుకుంటుంది ? ఏదో ఒక పేరుంటుంది కదా ? ఆ పేరు పిలువకుండా ఇంకొక పేరుతో పిలుస్తామంటే అప్పటి ఈదేశవాసులు ఊరుకుంటారా ? నా పేరు గోపదేవ్. ఎవరైనా వచ్చి నీపేరు నేను పలుకలేను, నిన్ను గోపదేవ్‌కు బదులుగా సుబ్బదేవ్ అంటాను అంటే నేనూరుకుంటానా? (సభలో నవ్వులు) నీవు అనలేకపోతే ఊరుకో నాపేరు గోపదేవ్ అంటాను. అలాగే పార్శీవాళ్ళు కొందరు వచ్చి మీదేశాన్ని మేము సింధూ దేశం అనలేము హిందూదేశం అంటాం. అంటే ఈ దేశవాసులు అంగీకరిస్తారా ! అంగీకరించరు. కనుక చరిత్రకారులు ఈ దేశాన్ని పార్శీలు సింధూ దేశం అనలేక హిందూదేశమన్నారు, అప్పటి నుండి యిది హిందూదేశమయింది అని చెప్పే వాదం సరియైనది కాదు.

మరి ఈహిందుపదం మనకు ఎక్కడి నుండి వచ్చింది ? మహమ్మదీయులు మనలను పాలించిన కాలంలో మనకు పెట్టిన పేరిది. మన ప్రాచీన సంస్కృతసాహిత్యం మొత్తం తిరగవేసి చూడండి. అందులో యీ 'హిందు' పదం మీకు ఎక్కడా కనబడదు. మనకు మహమ్మదీయ పరిపాలన వచ్చిన తరువాత హిందు పదం మన పైన బలవంతంగా రుద్దబడింది. ఆనాటి మహమ్మదీయ ప్రభువులు - ఔరంగజేబు మొదలైన వారంతా మనలను బలవంతంగా మహమ్మదీయ మతంలోనికి మార్చ యత్నించారు. ఆ విధంగా వారి మతంలోనికి మారని వారిని హిందువులన్నారు. హిందు శబ్దానికి అర్థం పార్శీభాషలో 'కాఫిక్' అని. (కుఫర్ అంటే పాపం అని అర్థం. కుఫర్ చేసిన వాళ్ళు కాఫిర్‌లవుతారు. కాఫిర్ అంటే పాపి అని అర్థం) కనుక హిందు శబ్దానికి పాపం చేసిన వాడనే అర్థంలో మహమ్మదీయ మతంలోనికి మారని, వారందరిని మహమ్మదీయులు వైదికులమయిన మనకు హిందు పదం వాడారు. మొదట మనమిది అంగీకరింపకున్నను వారి ప్రాభవమునకు లోబడి తదుపరి అంగీకరించాము.

చాల ఏండ్ల క్రితం, ఉమర్ ఆలీషాకవి ఆంధ్రపత్రికలో ఒక వ్యాసం వ్రాశాడు నేనది చూచాను. నాకు చాల ఆశ్చర్యం చేసింది. అందులో అతనంటాడు. 'నాకు చాలమంది హిందువులు శిష్యులుగా ఉన్నారు, కాని వారికి హిందు పదానికర్థం తెలియదు. అది తెలిస్తే ఒక్కడు కూడ తన్నుతాను హిందువని పిలవాడనికి అంగీకరించడు అన్నాడు'. యివి ఉన్నవి. హిందువు అంటే - కాఫిర్ (పాపి), డాకూ (బందిపోటు దొంగ), గులామ్ (బానిస), కాలా ఆద్మీ (నల్లని మనుష్యుడు), బద్మాష్ (తార్పుడుగాడు) అని యిలా చాల మనలను హిందువులని పిలవడం జరిగింది. ఈవిధంగా మహమ్మదీయులు మనలను పాలించిన రోజుల్లో బలవంతంగా హిందుపదం మనపై రుద్దటం జరిగింది. కనుక మనం హిందువులం

కాము, అయితే మరి ఎవ్వరం ?

మనం ఆర్యులం :-

మనం ఆర్యులం చరిత్రకారులు చెప్పే ఆర్యులం మాత్రం కాము మనం. మరి చరిత్రకారులు చెప్పే ఆర్యులెవరు ? అనిటే - మొదట మన దేశంలో ద్రావిడులు ఉండే వారని, ఆర్యులు ఎక్కడి నుండో ఉత్తరాన్నుండి - ఈరాన్ దేశం నుండి యిచటికి వచ్చి, ద్రావిడులను పారద్రోలి ఉత్తర భారతము నాక్రమించారని, అప్పటి నుండి ద్రావిడులు దక్షిణ భారతంలో నివాసం ఏర్పాటు చేసికొన్నారని, ఉత్తరభారతంలోని వారు ఆర్యులని, దక్షిణ భారతంలోని వారు ద్రావిడులని, ఆర్యులకు ద్రావిడులకు అప్పు డప్పుడు యుద్ధాలు జరుగుతుండేవని చెబు తుంటారు. పైగా చిత్రమేమంట& ద్రావిడులకు ఆర్యులకు యుద్ధాలు జరిగినట్లు వేదాలలో కూడ ఉన్నదని అంటున్నారు. ఈ Historians (చరిత్రకారులు)లో ఒక్కరూ వేదాలు సరిగా చదివిన వారు లేరు. వాళ్ళయిష్టము వచ్చినట్లు ఏవేవో వ్రాశారు. ఈ వ్రాతలు చదివిన వారు ద్రావిడులు వేరు, ఆర్యులు వేరని, నమ్ము తున్నారు. ఉత్తరాది వాళ్ళు ఆర్యులు కనుక వాళ్ళు మాట్లాడే హిందీభాష మా దాక్షిణాత్యుల (ద్రావిడుల) పైన రుద్దడానికి వీల్లేదని ఆందోళనలు చేస్తున్నారు. దక్షిణాది వారు ! ఆశ్చర్యమే మంటే వేదాలలో సుమారు 20,000 మంత్రాలకు పైగా ఉన్నాయి. ఈ మంత్రాలన్నీ తిరుగవేసినా అసలు ద్రవిడ పదమే అందులో దొరకదు. మరి చరిత్రకారులు - ఆర్యులు, ద్రావిడులు యుద్ధాలు చేసినట్లు వేదాలలో ఉన్నదని వ్రాశారు ! చూడండి వట్టి కల్పనలు చేసి చరిత్ర ఎలా వ్రాశారో ! ఇవి నమ్మి భారతీయులమైన మనం ఆర్య ద్రావిడ భేదాలతో సతమతమవుతున్నాం. ఇవా&'ళ తమిళనాడులో డి.యం.కె (ద్రవిడ మున్నేట్ర కజగం) వారు, మాకు ద్రవిడస్థాన్ వేరే కావాలని, భారదేశం నుండి విడిపోతా?ని అని అంటున్నారు. నేను ఒకమారు మదరాసులో ద్రవిడ కజగం నాయకుడు శ్రీ పి.వి.రామస్వామి నాయకర్‌ను కలుసుకున్నాను. ఆయనతో ఇది చెప్పాను. మీరు ఆర్యులు ద్రావిడులు వేరనుకుంటున్నారు. అది సరికాదు. మనమందరం ఆర్యులమేను, అసలు ద్రవిడ పదమే వేదాలల్లో ఎక్కడాలేదు అన్నాను. ఆయనకు ఆశ్చర్యం వేసింది. అయితే వేదాలల్లో యిది లేదా ? అన్నాడు. లేదన్నాను, ఇలా పెద్ద నాయకులు కూడ ఇంగ్లీషు వాళ్ళు వ్రాసిన చరిత్రలు నమ్మి ఆర్య, ద్రావడ విభేదాలను విడనాడలేక పోతున్నారు. కనుక చరిత్రకారులు చెబుతున్నట్లు ఆర్యులు ఎక్కడి నుండో ఉత్తరాది నుండి వచ్చారని చెప్పేవాదం సరియైంది కాదు. మన దేశంలోనే ఆర్యులు అనాదిగా ఉంటున్నారు. ఇది మన ప్రాచీన గ్రంథాల్లో చదువుతాం. ఆర్యావర్తమని ఈ దేశానికే పేరున్నది. మరి యేదేశానికి లేదు.

మరి మన శాస్త్రాల్లో ఈ దేశానికి పేరేమిటి? చాల పేర్లున్నాయి. జంబూ ద్వీపమని, భరతవర్షమని (భరతుని చేత పాలింపబడింది కనుక) భరతఖండమని, ఆర్యావర్తమని (ఆర్యులుండే దేశం) పేర్లున్నాయి. కాని 'హిందూదేశమని' ఎక్కడా లేదు. ఎప్పుడైనా మీరు సభలో మాట్లాడే ముందు ఏమని సంబోధిస్తారు ? ఆర్యులారా ? అనిటారు. ఓ హిందువులారా అని అంటారా ? అనరు ఈదేశం ఆర్యావర్తం అనడానికి మీకు యింకొక ఉదాహరణ చెబుతాను. సంధ్యావందనం చేసేటప్పుడు బ్రాహ్మణాది వర్ణస్థుల్లో సంకల్పం చెప్పుకొనే అలవాటుంది. ఇది కొన్ని కోట్ల సంవత్సరాలుగా వస్తున్నది. ఆసంకల్పంలో ఏం చెబుతాం ? 'జంబూ ద్వీపే భరతవర్షే భరతఖండే మేరోరక్షిణ దిగ్భాగే' "ఆర్యావర్తే" పుణ్యభూమౌ కృష్ణా కావేర్యోర్మధ్య దేశే అంటూ తన ఊరి పేరు తన పేరు తిథి వార మాసములతో సహా సంకల్పం చెప్పు కుంటుంటారు. అందులో "ఆర్యావర్తే పుణ్య భూమౌ" (ఆర్యులు వర్తించిన పుణ్యభూమి) అని కూడ కీర్తిస్తారు. కనుక మనం ఆర్యులం అందుకనే కృష్ణుడు కూడ 'అనార్యజుష్టం' - అర్జునా ! నీవీ ఆర్యులకు తగనిపని చేస్తున్నావు అంటాడు గీతలో. అందుచేత మనం హిందువులం కాము, ఆర్యులమనేది శాస్త్రసమ్మతం.

కాని పావం హిందు పదం వదిలి పెట్టడానికి యిష్టం లేక కొందరు దానికి ఏదేదో వ్యుత్పత్తి అర్థం చెప్పి సమర్థించాలని చూస్తుంటారు. 'హీనం దునో తీతి హిందుః' - హీనుణ్ణి దండించేవాడు. కనుక హిందువు' అని చెప్పి సమర్థిస్తుంటారు. అయితే మనం హీనుల్ని - చేత కాని వాళ్ళను దండించే వాళ్ళమే కాని బలవంతుల్ని ఏమీ చేయలేమన్న మాట (సభలో నవ్వులు) ఇలా సమర్థించడంలో అర్థం లేదు. మనకు స్వాతంత్ర్యం వచ్చిన తరువాత రాజ్యాంగంలో మనది. భారతదేశమనే నిర్ణయించడినది. హిందూదేశమని కాదు. కనుక మనం అందరం భారతీయులం. ఈ దేశంలో ఉండే క్రైస్తవులు, మహమ్మదీయులు అందరూ భారతీయులే. ఇప్పుడు క్రైస్తవులయిన వారు కూడ ఒకప్పుడు హిందువులే. క్రైస్తవులయిన తరువాత వారిపుడు మనల్ని 'అన్యులు' అంటున్నారు. మనం అన్యులమట ! క్రైస్తవులు మతప్రచారం చేస్తూ మిమ్ములను (దీర్ఘం తీసి పలుకుతూ శ్రీగురుదేవులు) "ఓ పాపులారా" అని సంబోధిస్తారు (సభలో నవ్వులు) వారి దేవుడు పుట్టించిన ఆదం, అవ్వపాపం చేశారట, వారి సంతతి కనుక వారంతా పాపులవుతారు కాని, మీరు పాపులు ఎలా అవుతారు ? వాళ్ళు మిమ్మల్ని ఓ పాపులారా ! అంటుంటే, అదేదో వాళ్ళు మిమ్మల్ని భూషిస్తున్నట్లు విని ఊరుకుంటారు ! ఇంగ్లీషురాని వాణ్ణి, ఇంగ్లీషు వచ్చినవాడు 'రాస్కెల్' (Rascal-పాపి, అయోగ్యుడు) అంటే ఓహో, యిదేదో తనను నుంచి వాడంటున్నాడు కాబోలు అనుకుంటాడు (సభలో నవ్వులు) కనుక క్రైస్తవులు మిమ్మల్ని పాపులని సంబోధిస్తే. అది విని మీరు ఊరుకోకూడదు, వాళ్ళకు గట్టిగా చెప్పాలి, మీరు పాపులు అయితే కావచ్చును గాని మేం పాపులం కాదని.

మనం ఆర్యులం అనడానికి మీకు యింకొకటి చెబుతాను. మనకు తెలుగులో 'పోతనార్య' 'తిక్కనార్య' అనే పేర్లున్నాయి. ఆ ఆర్యపదమే తెలుగులో 'అయ్య' అయింది. వెంకయ్య, పుల్లయ్య, సుబ్బయ్య పేర్లు అలా వచ్చినవే. కనుక మనం ఆర్యులం అనడంలో సందేహం లేదు.

అయితే ఆర్య పదం అంగీకరించడం యిష్టం లేక హిందుపదాన్ని సమర్థించే వారిలో శ్రీ ఉమామహేశ్వర పండితుని లాంటి వారు పురాణాలలోని శ్లోకాలు తీసికొని ఉపన్యసిస్తూ యివి వేదంలో ఉన్నాయి అని చెబుతారు. M.A. (Master of Arts) B.A. (Bachelor of Arts) ల వలె 'హిం కృణ్వంతి' అనే వాక్యం నుండి. 'హిం దునోతి' అనే పదం నుండి'దు' తీసికొని 'హిందు' పదం ఏర్పడింది. అని చెబుతుంటారు. అలాగైతే

సిపాయిలకు సంకెళ్ళు

- ఎం.వి.ఆర్. శాస్త్రి

అశుద్ధపు తూటాలు కొరకబోమన్న 'నేరానికి' కోర్ట్ మార్షల్ చేసి బరంపురం నుంచి తరలించిన 19వ పటాలం 1857 మార్చి 31 ఉదయం కాళ్లీడ్చుకుంటూ బారక్‌పూర్ చేరింది. శిక్ష ఏమిటో సరిగా తెలియదు గాని మొత్తానికి తమ కొలువుకు మూడిందన్న సంగతి సిపాయిలు ఎరుగుదురు. మామూలుగానే తమను పురుగుల్లా చూస్తూ, తమ మతాన్ని, తమ విశ్వాసాలను, తమ దేవతలను అకారణంగా దూషిస్తాండే తెల్లదొరలు మతాచారాల కారణంతో తాము తిరగబడటాన్ని తీవ్రంగా పరిగణించి కర్కశంగా కాలరాచివేస్తారనడంలో వారికి సందేహం ఎంత మాత్రం లేదు.

పటాలంలో ఒకరూ ఇద్దరు కాదు ఏకంగా వెయ్యిమంది సిపాయిలున్నారు. అందరి చేతిలోనూ ఆయుధాలున్నాయి. వారి చుట్టూ గొప్ప సైనిక కాపలా ఏమీ లేదు. తలచుకుంటే బారక్‌పూర్ చేరకుండా మధ్యదారిలోనే అంతా కలిసి పై అధికారులపై తిరగబడి కట్టకట్టుకుని పారిపోగలిగేవారే. విశృంఖల విధ్వంసం చేయగలిగేవారే. కాని సిపాయిలకు అటువంటి ఆలోచనే రాలేదు. మతాన్ని మంట గలిపిస్తున్నారన్న కడుపు మంటతో క్షణికావేశంలో ఎదురుతిరిగినా, దుర్నిరీక్ష్యమైన బ్రిటిష్ సైనిక శక్తిని ఎదిరించి నిలవగలమన్న ధైర్యం వారికి లేదు. దేవుడి మీద భారం వేసి, బితుకు బితుకుమంటూ వారు పిల్లుల్లా గమ్యం చేరారు.

అంతకుముందు రోజే ప్రత్యేకంగా పిలిపించిన సీమ రాణివారి 84వ రెజిమెంటు, రెండు బ్యాటరీల యూరోపియన్ శతఘ్ని దళం బారక్‌పూర్ చేరుకున్నాయి. ఆ సీమ సేనల గట్టి బందోబస్తు మధ్య, ఇంగ్లీషు శతఘ్నులు ఏ క్షణమైనా పేలడానికి నోళ్లు తెరుచుకుని ఉండగా, నేటివ్ బ్రిగేడ్ సైనికులందరూ నివ్వెరపోయి చూస్తుండగా 19వ పటాలాన్ని బారులు తీర్చి నిలబెట్టి గవర్నర్ జనరల్ వారి ఉత్తర్వును చదివి వినిపించారు. తూటాల గురించి వారి భయాలన్నీ వట్టి భ్రమలనీ, అకారణంగా రెచ్చిపోయి క్షమించరాని అవిధేయతకు పాల్పడినందుకు మొత్తం పటాలాన్నీ రద్దుచేస్తున్నామనీ ఎలుగెత్తి చాటారు. తర్వాత సిపాయిలందర్నీ ఆయుధాలు ఒకచోట పడెయ్యమన్నారు. బెల్టులు తీసి బాయినెట్ల మీద ఉంచమన్నారు. యూనిఫాంలను మాత్రం దయతలిచి ఉంచుకోనిచ్చారు. మిమ్మల్ని సేన నుంచి గెంటేస్తున్నాం, నెత్తిన చెంగేసుకుని మీ ఇళ్లకు పొండి అన్నారు. సిపాయిలు కిక్కురుమనకుండా గుడ్ల నీళ్లు కక్కుకుంటూ ఆజ్ఞలు పాటించారు. కంటి చూపుతోనే సహచరుల నుంచి సెలవు తీసుకుని దీనంగా, భారంగా అడుగులేస్తూ ఇంటిదారి పట్టారు.

దొరలది దొడ్డ మనసు. గెంటేసిన సిపాయిలకు ప్రయాణం ఖర్చుకింద కాస్త మొత్తం చేతిలో పెట్టారు. ఆ ఔదార్యానికి మురిసి ముప్పందుమై మిగతా సిపాయిలు తన ఘనతను మిక్కిలి కొనియాడుతారని వారు ఊహించారు. కాని - చూస్తున్న సిపాయిలకు మాత్రం దొరవార్ల తీరులో ఔదార్యంకంటే దౌర్జన్యమే ఎక్కువగా కనిపించింది. మా మతాచారానికి విరుద్ధం, చండాలపు తూటాలను కొరకమనకండి మహాప్రభో అని మొత్తుకున్నా వినకుండా, ఆక్రోశాన్ని వెలిగక్కిన అపరాధానికే ఉద్యోగాలు ఊడగొట్టి, తుపాకులు లాక్కుని తమ సోదరులను వెళ్లగొట్టారే ! తమదీ అదే సమస్య కదా ? ఆత్మను చంపుకోలేకపోతే రేపు తమ గతీ అంతే కదా - అని వారికి నిర్వేదం కలిగింది. ఎదురుతిరిగితే ఇదిగో ఇలా బర్తరఫ్ చేస్తామని ప్రత్యక్షంగా చూపిస్తే మిగతా సిపాయిలు భయపడి, తల ఎగరేయకుండా బుద్ధిగా పడి ఉంటారని దొరలు అనుకున్నారు. కాని - ఆచారానికి కట్టుబడి, కొలువుకంటే కట్టుబాటుకు విలువిచ్చి, ధైర్యంగా ఎదురుతిరిగి, హుందాగా శిక్షను స్వీకరించిన సోదరులను చూస్తే మిగతా వారికి భయం కాదు - భక్తే కలిగింది. వారి లోలోన రగులుతున్న ధర్మాగ్రహం ఇంకా ప్రజ్వరిల్లింది.

19వ పటాలాన్ని సాగనంపి నెల తిరిగిందో లేదో 34వ పటాలం వంతు వచ్చింది. మంగళ్‌పాండే ఎదురుతిరిగి కాల్పులతో బీభత్సం సాగించినప్పుడు పై వారెవరు ఆజ్ఞాపించినా, అతణ్ని అదుపు చేయటానికి అతడి పటాలంలో ఎవరూ ఇచ్చగించలేదన్న కచ్చితో కంపెనీవారు ఆగ్రహించారు. యథావిధిగా మొక్కుబడి విచారణ అనంతరం గవర్నర్ జనరల్ కానింగ్ ప్రభువు 34వ రెజిమెంటును కూడా రద్దుపరుస్తూ ఉత్తర్వు చేశారు. మళ్లీ అదే సీను. అదే తతంగం. యూరోపియన్ దళాల గట్టి సహరా మధ్య 84వ రెజిమెంటుకు చెంది ఆ సమయాన అక్కడ ఉన్న 500 మంది సిపాయిలనూ సమావేశపరిచి, ఉత్తర్వు వినిపించి, వెళ్లగొట్టారు. ఈసారి వంటి మీద యూనిఫాంలు కూడా ఉండనివ్వకుండా విప్పించి లాగేసుకున్నారు. ఆఖరికి ప్రయాణం ఖర్చుకు కూడా పైకం ఇవ్వలేదు. మీ తిప్పలు మీరు పడండి పొమ్మన్నారు. అది చూసిన మిగతా సిపాయిలకు కడుపు మండింది. వారి లోపలి క్రోధం మరింత పెరిగింది.

అవిధేయతను ఎక్కడికక్కడ అణచివేస్తే ఇకపై ధిక్కారానికి ఎవరూ సాహసించరనీ, అంతటితో అలజడి సమసిపోతుందనీ 'జాన్ కంపెనీ' జానీలైతే అనుకున్నారు. కానీ కథ అక్కడితో అయిపోలేదు. అసలు కథ అప్పుడే మొదలైంది. కొలువునుంచి తొలగించిన 19వ పటాలం వారు వెయ్యి మంది; 34వ పటాలం సిపాయిలు 500 మంది - వెరశి 1500 మంది స్వస్థలాలకు వెళ్లి దొరలు చేసిన అన్యాయాన్ని, దేశీయులను మతభ్రష్టుల్ని చేయటానికి వారు ఒడిగట్టిన అఘాయిత్యాన్ని, తద్వారా ముంచుకొస్తున్న ముప్పును వేనోళ్ల వ్యాప్తి చేశారు. ఆ వైనాలు ఆనోట ఈనోట పడి దేశమంతటా వ్యాపించాయి. ఆవు, పందుల ఎముకల పొడిని పిండిలో కలిపి అందరిచేతా తినిపించనున్నారని పుకార్లు పుట్టాయి. మతావేశం పెరిగి దేశమంతా అట్టుడికిపోయింది.

నాటి బెంగాలు సైన్యంలో అత్యధిక సంఖ్యాకులు అవధ్ ప్రాంతానికి చెందినవారు. బర్తరఫ్ అయిన రెండు పటాలాల్లో దాదాపు అందరూ ఆ ప్రాంతంవారే. వెనక్కి వచ్చి వారు మోసుకొచ్చిన దుర్వార్తలను విని అక్కడి జనం నిశ్చేష్టులయ్యారు. స్థానికంగా ఉన్న పటాలాల మీద వారి సంపర్క ప్రభావం సహజంగానే పడింది. ముఖ్యంగా మీరట్ కంటోన్మెంటులో బారక్‌పూర్ నుంచి బర్తరఫయిన సిపాయిలు రావడానికి ముందే అక్కడ పరిస్థితి ఉద్రిక్తంగా ఉంది. ఢిల్లీకి సుమారు 40 మైళ్ల దూరంలోని

మీరట్ బ్రిటిష్ వారికి దేశంలో గల పెద్ద సైనిక స్థావరాల్లో ఒకటి. నేటివులతో కూడిన పదాతి దళం రెజిమెంట్లు రెండు, అశ్విక దళం రెజిమెంటు ఒకటి ఉన్నాయక్కడ. అవిగాక పూర్తిగా బ్రిటిష్ వారితో నిండిన రెజిమెంట్లూ, రైఫిల్స్ బెటాలియన్లూ, ఆశ్విక బలగాలూ దండిగా ఉండటంతో ఎటువంటి తిరుగు బాటునైనా అవలీలగా అణచివేయగలమన్న ధీమా తెల్లదొరలకు జాస్తి. అందునా అక్కడి 3వ నేటివ్ కావల్రీ (ఆశ్విక దళం) కమాండరయిన కర్నల్ స్మిత్‌కు మహా గీర. భారతీయులన్నా వారి సెంటిమెంట్లన్నా అతడికి చాలా చులకన.

కొత్తగా వచ్చిన తూటాలను ఎలా వాడాలో నేర్పటంకోసం ఏప్రిల్ 24న పెరేడ్ పెట్టదలిచి, వివిధ దళాలకు చెందిన 90 మంది రౌతులను దానికోసం ఎన్నిక చేశాడు. కొత్త తూటాలు మలినమైనవన్న సంగతి కర్ణాకర్ణిగా అప్పటికే అందరికీ తెలిసింది కనక వాటిని తాకటానికి ఆశ్వికులు నిరాకరించారు. ఏప్రిల్ 24 పెరేడ్‌లో ఐదుగురు తప్ప అందరూ తూటాలను తీసుకోమన్నారు. తీసుకోక తప్పదని కర్నల్ స్మిత్ ఎంత నిర్బంధించినా ప్రయోజనం లేకపోయింది. దొర ఆజ్ఞకు బెదిరి మతభ్రష్టులు కావటానికి ఎవరూ సిద్ధపడలేదు. పెరేడ్ భగ్నమైంది. దొరలు అగ్గిరాములయ్యారు. రివాజు ప్రకారం కోర్ట్ ఆఫ్ ఎంక్వయిరీని, ఆ తరువాత కోర్ట్ మార్షల్‌ని జరిపించారు. నేటివ్‌లపై కోర్టు మార్షలును నేటివ్‌ల చేతే జరిపించటం తమ ధర్మబుద్ధికి నిదర్శనమని తెల్లవారు గొప్పగా చెపుతారు. మార్షల్ కోర్టు పీటల మీద కూచునేది జన్మతః భారతీయులే అయినా పైనున్న దొరల ఇంగితమెరిగి మెలగాల్సిందే తప్ప స్వతంత్రంగా వ్యవహరించి సోదర సైనికులకు న్యాయం చేసే సావకాశం వారికి సున్న. అక్కడికీ ఒకడు ధైర్యంచేసి విభేదించినా, మిగతా 14 మంది పై వారి ఒత్తిడికి తందాన అనటంతో షరా మామూలుగా నేర నిర్ధారణ అయిపోయింది.

బరంపురంలో తిరగబడ్డ 19వ పటాలాన్ని బర్తరఫ్ చేసినా యూనిఫాంను ఉంచు కోనిచ్చారు. బారక్‌పూరలో సహాయ నిరాకరణ చేసిన 34వ పటాలానికి యూనిఫాంను లాగేసినా వెళ్లగొట్టారే తప్ప ఖైదు చేయలేదు. ఈ రెండు పటాలాలతో పోల్చితే మీరట్ దండు అపరాధం చిన్నదే అయినా వాటికంటే కూడా ఎన్నోరెట్లు కఠినమైన శిక్షను మీరట్ వారికి విధించారు. కలుషితమైన తూటాలు నోట పెట్టుకోవటమే మహా నేరంగా ఎంచి, వారి ప్రార్థనలనూ, నబబైన అభ్యంతరాలనూ పెడచెవిన పెట్టి, వట్టి భర్తరఫ్ చాలదని తలచి, నిందితులు మొత్తం 85 మందికీ పదేళ్ల కఠిన కారాగార శిక్షను విధించారు. ఆ సంగతి తెలిసిన సిపాయిలు యావన్మందీ అవాక్కయ్యారు.

శిక్షే క్రూరమైనదనుకుంటే దానిని అమలుపరచిన తీరు క్రూరాతి క్రూరమైనది.

అది 1857 మే 9. సిపాయిల మనసుల్లో లాగే ఆకాశంలోనూ మబ్బులు కమ్మాయి. ఉదయమే మొత్తం బ్రిగేడ్ అంతటిని పెరేడ్ గ్రవుండుకు పిలిచారు. ఎవరూ తోక జాడించటానికి వీల్లేకుండా యూరోపియన్ బలగాలనూ, ఆశ్విక దళాలనూ, ఫిరంగుల దండునూ చుట్టూ కాపలా పెట్టారు. అప్పుడు ఏమి జరిగిందీ విఖ్యాత ఆంగ్ల చరిత్రకారుడు ***Sir John Kaye*** మాటల్లో చదవండి :

"Under a guard of Rifles and Carabineers, the Eighty-five were then brought forward, clad in their regimental uniforms - soldiers still; and then the sentence was read alud, which was to convert soldiers into felons. Their accoutrements were taken from them, and their uniforms were stipped from their backs. Then the armourers and the smiths came forward with their shackles and their tools, and soon in the presence of that great concourse of their old comrades, the Eighty-five stood, with the outward symbols of their dire disgrace fasttened upon them... Lifting up their hands and lifting up their voices, the prisoners implored the General to have mercy upon them... There was not a Sepoy present who did not feel the rising indignation indignation in his throat."

[***A History of the Sepoy Was in India, John Koye,*** Vol.II P.51]

(రైఫిళ్లు, పొట్టి తుపాకుల దళాలు కాపుకాస్తుండగా ఎనభై ఐదుగురినీ ముందుకు తెచ్చారు. అప్పటికి వారు ఇంకా సోల్జర్లే. రెజిమెంటు యూనిఫాం వేసుకుని ఉన్నారు. వారికి విధించిన శిక్షను అప్పుడు బిగ్గరగా చదివి వారికి వినిపించారు. సైనికులు కాస్తా నేరస్థులు అయిపోయారు. వారినుంచి సైనిక చిహ్నాలు లాగేశారు. వొంటి మీది యూనిఫాంలను విప్పించారు. బేడీలను, కొక్కేలను, పనిముట్లను పట్టుకుని కమ్మరి పనివాళ్లు వచ్చారు. సహచరుల మహా సమూహం సమక్షంలో తమ కాళ్లకూ చేతులకూ అవమాన చిహ్నాల బంధనాలు పడుతూండగా చేతులెత్తి ఆ ఎనభై ఐదుగురూ గొంతెత్తి దయ చూపమంటూ జనరల్‌ను కడుదీనంగా వేడుకున్నారు... అప్పుడక్కడ ఉన్నవారిలో గొంతు నిండా క్రోధం రగలని సిపాయి ఒక్కడూ లేడు.)

"కమ్మరి వాళ్లు తమ పని తాపీగా కానిచ్చారు. అంతమంది కాళ్లకు చేతులకు సంకెళ్లు దిగవేయడానికి చాలా సమయం పట్టింది. ఎన్నో యుద్ధాల్లో ప్రాణాలొడ్డి తెల్లదొరలకు అఖండ విజయాలను చేకూర్చి పెట్టి, అందుకు గుర్తింపుగా ప్రతిష్ఠాత్మకమైన ఎన్నో పతకాలను పొంది, నిన్నటిదాకా రొమ్ము విరుచుకు తిరిగిన యోధులు, వాటన్నిటినీ తమ వొంటినుంచి వొలిచేసి, యూనిఫాంను కూడా ఊడబెరికి సంకెళ్లు వేస్తుంటే వలవల ఏడ్చారు. వారిని చూసి యువ సిపాయిలూ దుఃఖం ఆపుకోలేకపోయారు. నా జీవితంలో అంతటి హృదయ విదారక దృశ్యం మరొకటి చూడలేదు" అంటాడు. ***'Old Memories'*** **గ్రంథంలో ప్రత్యక్ష సాక్షి.**

సంకెళ్లు పడ్డ ఖైదీలను బందిఖానాకు తరలించి చీకటి కొట్లలో పెట్టారు. బరువెక్కిన గుండెలతో సిపాయిలు తిరిగొచ్చారు. తమ తోటివారికి పట్టిన గతి చూశాక ఇక సిపాయిలెవరూ తల ఎగరవేయలేరనీ, మతమూ ఆచారమూ అని గింజుకోకుండా దేన్ని కొరకమంటే దానిని కిమ్మనక కొరికి, తమ కాళ్ల దగ్గర చచ్చినట్టు పడి ఉంటారని కర్నల్ స్మిత్తూ, ఇతర దొరలూ ధీమాగా ఉండి తమ చురుకుతనాన్ని కరకుతనాన్ని తామే తెగ మెచ్చేసుకున్నారు. బారక్‌పూర్ సెగలు మీరట్‌కు పాకి, సైనికుల లోపల మరుగుతున్న లావా పెల్లుబికి 24 గంటల లోపలే అగ్నిపర్వతం బద్దలవబోతున్నదన్న సంగతి వారికి తెలియదు. తాము చూస్తున్నది తుఫానుకు ముందుండే స్తబ్ధత అని వారు గ్రహించలేదు. పెద్దఎత్తున తిరుగుబాటుకు కుట్ర ఏదో జరుగుతున్నదట అని ఒక యూరోపియన్ ఆఫీసరు ఉప్పందిస్తే 'పనికిమాలిన కబుర్లు పట్టించుకోకుణ అని కర్నల్ స్మిత్ చిరాకు పడ్డాడు కూడా.

బారక్స్‌కు తిరిగొచ్చిన సిపాయిలెవరికీ అన్నం సయించలేదు. కాళ్లూ చేతులకు సంకెళ్లతో వెళుతూ వెళుతూ ఖైదీలు తమకేసి దీనంగా చూసిన చూపే కళ్లు మూసినా తెరిచినా

వారికి గుర్తుకు రాసాగింది. మాకింత అన్యాయం జరుగుతూంటే గుడ్లప్పగించి చూస్తారేమర్రా అని తమను ఉద్దేశించి వారు వేసిన కేకలు వారి చెవుల్లో అనుక్షణం మారుమోగసాగాయి. తమ సహచరులు ఏ తప్పూ చేయలేదు. తాము అందరూ చాలారోజులుగా మథనపడుతున్నదే వారిని కూడా బాధించింది. తాము చేయాలను కుంటున్నదే వారు ధైర్యంగా చేశారు. ధర్మానికి, ఆచారానికి, సంప్రదాయానికి భంగం కలిగించడానికి ససేమిరా సమ్మతించక నిర్భయంగా ప్రతిఘటించి తమందరికీ వారు ఆరాధ్యులూ, మార్గదర్శకులూ అయ్యారు. విశ్వాసంకోసం బలిదానానికి సిద్ధపడ్డ వారిని అలా వదిలేయటం అమానుషం. మనకెందుకు లెమ్మని ఊరుకుంటే ఇవాళ వారికి పట్టిన గతే రేపు అందరికీ పడుతుంది. ఎద్దుల ఎముకలు పొడిచేసి కలిపిన పిండితో రొట్టెలను చేసుకు తింటూ, ఆవు కొవ్వునూ, పంది కొవ్వునూ నోట కరుస్తూ కులం నుంచి వెలివేయబడి, సర్వభ్రష్టులై హీనాతిహీనంగా, హేయాతి హేయంగా తమను తామే అసహ్యించుకుంటూ నికృష్టపు బతుకు బతకాల్సి వస్తుంది. అంతకంటే చావటం మేలు. దౌర్జన్యానికి, పశుబలానికి తలవంచి అవమానాలతో చస్తూ బతికే కంటే ధైర్యంగా తిరగబడి, తమను ఇంతటి రంపపు కోతకు గురిచేసిన విదేశీ రాకాసులపై కలిసికట్టుగా పోరాడి చావటం మేలు.

ఈ రకమైన భావావేశంతో యువ సిపాయిలు లోలోన దహించుకుపోతుండగా నిప్పుకు గాలి తోడైనట్టు ఎక్కడికి పోయినా ఎవరిని కలిసినా వారిని సాధారణ పౌరులు, సామాన్య గృహిణులు మాటల ఈటెలతో పొడవసాగారు. ఆఖరికి మీరట్‌లోని పడుపుగత్తెలు కూడా మీ వాళ్లని అలా ఖైదు చేస్తే మిన్నకున్నారేమి, మీకు మగతనం లేదా అని సిపాయిలను ఉడికించారు. ఆ రాత్రి ఎవరూ నిద్రపోలేదు. ఏమి చేయాలి, ఎలా చేయాలి అని సిపాయిలు గుంపులు గుంపులుగా గుసగుసలాడుకున్నారు. ఎలా కదలాలి, కదిలి ఏమి చేయాలని తలపోస్తూ ఉద్వేగంతో, ఆందోళనతో పరిపరి విధాల యోచిస్తుండగా తెల్లవారింది. భయానక బీభత్సానికి, భీషణ సంగ్రామానికి, చరిత్రను మలుపు తిప్పే మహా విప్లవానికి తెర తొలగింది.

అది చరిత్రలో మరపురాని రోజు.

1857 మే 10.

M.A; అన్నప్పుడు 'M' కు 'A' కు మధ్యలో చుక్క పెడుతున్నాం కదా ? అలాగే హిందు పదంలో 'హిం' కు 'దు' కు మధ్యలో చుక్కపెట్టి వ్రాయాలి. కాని మనం అలా వ్రాయడం లేదు. కారణమేమి ? అందుచేత అది రెండు పదముల సంగ్రహ పదం కాదని తేలుతుంది.

ఆర్య సమాజకులవడం అంత సులభం కాదు:-

అసలు ఈ హిందుపదాన్ని సమర్థించే వాళ్ళకొక భయం ఉంది. మనం ఆర్యులం అని అంగీకరిస్తే ఆర్య సమాజకులమయి పోతా మేమోనని. ఆర్య సమాజకులవడం అంత సులభ మేం కాదు. మొదట ఆర్యులు (శ్రేష్ఠులు) కావాలి. తరువాత ఆర్య సమాజకులవుతారు. వేదాలు, తదితర వైదిక సాహిత్యం చదివి దాన్ని ప్రచారంలో పెట్టాలి. అప్పుడతడు ఆర్య సమాజకుడౌతాడు. ఆర్య సమాజకులు సత్యాన్ని బయటపెట్టి సంఘంలో ఉండే దురాచారాలను ఖండిస్తుంటారు. అందుచేత ఈపౌరాణికులకు, ఎక్కడ వాళ్ళ మోసాలు బయటపడతాయోనని పాపం భయం. కనుక ఆర్యసమాజం వాళ్ళన్నా, ఆర్యపదమన్నా వాళ్ళకు యిష్టం ఉండదు.

మదనమోహన మాలవ్యా 'హిందు' పద నిర్వచనం చేయడంలో ఒక నిర్ణయానికి రాలేక పోయాడు :-

నేను కాశిలో ఉన్న రోజుల్లో శ్రీ పండిత మదనమోహన మాలవ్యా హిందుపదాన్ని నిర్వచించడానికి ప్రయత్నించాడు. దేవుడున్నాడనే వారు హిందువులు అందామా అంటే, హిందువులలో దేవుడు లేడనే నాస్తికులు కూడ ఉన్నారు. యజ్ఞోపవీతం వేసికున్న వాళ్ళు హిందువులందామా అంటే, యజ్ఞోపవీతం లేనివాళ్ళు చాలమంది వారిలో ఉన్నారు. పోనీ అడ్డబొట్టు పెట్టుకొనే వాళ్ళు హిందువులను కుందామంటే నిలువుబొట్టు పెట్టిన వాళ్ళూ హిందువుల్లో ఉన్నారు. (సభలో నవ్వులు) నెత్తి మీద జుట్టున్న వాళ్ళు హిందువులంటే, జుట్టు లేనివాళ్ళు కూడ ఉన్నారు. ఇలా ఆయన 'హిందు' పద నిర్వచనం చెయయడంలో ఒక నిర్ణయానికి రాలేకపోయాడు.

ఆర్యశబ్దం చాల ఉత్తమమైనది :-

అందుచేత హిందువులనడంలో ఏం విశేషముంది ? కావున మనం ఆర్యులమే కాని హిందువులం కాదు. అది అర్థవంతమైన పదం. ఆర్యుడంటే ప్రగతి శీలుడని అర్థం. మన పూర్వులు ఆర్యులై యితరులను ప్రగతిపథమున నడిపిన వారు. ఇవ్వాళ ప్రపంచం ప్రగతి పథంలో నడుస్తున్నది. మన మంతా కూడ దేశపు ప్రగతి కోసం పాటుపడుతున్నాం. వేదాలలో మనకు వాడిన శబ్దం ఆర్యశబ్దమే. **'విజానీః ఆర్యాన్ యేచ దస్యవః' - ఆర్యులు,** దస్యులు అని యిరు తెగలవారు మనుష్యులలో ఉంటారని వేదం చెబుతుంది. వారిలో ఆర్యులంటే - నియమ బద్ధంగా జీవితం గడిపి సంఘశాంతికి తోడ్పడే వారని అర్థం. దస్యులు అంటే సంఘానికి హాని కలిగించేవారని అర్థం. **'దసుఉపక్షయే'** - అనే ధాతువుతో దస్యశబ్దం ఏర్పడుతుంది. 'ఆర్యుడంటే ఎవరు'? 'ఆర్యః కస్మాత్' అని ప్రశ్న వేసికొని యాస్కా చార్యుడు తన 'నిరుక్తం' (వైదిక నిఘంటువు)లో **'ఆర్యః ఈశ్వరపుత్రః'** - భగవంతుని తండ్రిగా అంగీ కరించేవాడు ఆర్యుడన్నాడు. ఎంత చక్కగా చెప్పాడో చూడండి. మనమందరం భగవంతుని తండ్రిగా అంగీకరిస్తాం. కనుక మనం ఆర్యులమని చెప్పుకోవడానికి సందేహించ నక్కరలేదు. **ఆర్యశబ్దం 'ఋగతౌ' అనే ధాతువుతో** ఏర్పడింది. గతి అనగా గమనం, జ్ఞానం, ప్రాప్తి అని అర్థాలున్నాయి. అంటే ఆర్యుడు ప్రగతి శీలుడు శ్రేష్ఠుడు అని అర్థం. జ్ఞానం కొఱకు, లేని దాని కొఱకు యత్నించువాడు. **కర్తవ్యమాచరన్ కర్మ అకర్త వ్యమనా చరన్, తిష్ఠతి ప్రకృతా చారే సవై ఆర్య ఇతీ రితః** - కర్తవ్య కర్మలు వేద విహిత కర్మలు - ఆచరించే వాడు, విరుద్ధమైన కర్మలు ఆచరింపని వాడు, ఆర్యుడనబడతాడు. ఇలా ఆర్య శబ్దానికి మంచి అర్థాలున్నాయి. అద్వైత మత స్థాపకుడైన శంకరుడు, విశిష్టాద్వైత మతమును స్థాపించిన రామానుజుడు, ద్వైతమతాన్ని స్థాపించిన మధ్వుడు వీరందరూ కూడ, ఆర్యపదాన్ని అంగీకరించుతున్నప్పుడు మనం ఆర్యులమని చెప్పుకోడానికి ఎందుకంగీ కరించరు ?

కృష్ణుడు, అర్జునుణ్ణి సంబోధిస్తూ 'అనార్యజుష్టం' - అర్జునా ! ఆర్యులకు తగని ఈ మనోమాలిన్యం నీకెక్కడి నుండి వచ్చింది అంటాడు. అందుచేత, ఆర్యశబ్దాన్ని వితీవరిస్తూ మీకి దంతా చెప్పవలసి వచ్చింది. మిగిలింది రేపు చెప్పుకుందాం.

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगना, सुल्तान बाजार,

बिक्री विभाग

1. గీతామృతము
2. వైదిక ధర్మోపదేశములు (ద్వితీయ భాగం)
3. వైదిక భజనామృతము (సప్రమాణ విభూషితము)
4. ఆర్య సమాజమునగా నేమి ?
5. ఓంకార ధ్వనులు
6. వైదిక దర్మోపదేశములు (తృతీయ భాగం) (ప్రథమ భాగం)
7. సంస్కార విధి
8. ఆరోగ్యమే మహాభాగ్యము
9. వైదిక సంధ్యా వందన రహస్యము
10. ఆర్యపుత్ర శతకము
11. సత్సంగ మహిమ
12. మేధస్సు జ్ఞానములను పెంపొందదించుకోవడం మెలా ?
13. గురు విరజానందుడు- ఋషి దయానందుడు
13. ధార్మిక లఘు గ్రంథావళి
14. 'కండ్లజోడు లేకుండ బాగా చూడడం ఎలా
15. ఆర్య సమాజకులు వేద దర్మ ప్రచారం ఎలా చేస్తె బాగుంటుంది ?
16. ఋషిదయానంద వచనామృతము మహర్షి దయానంద వాణి
17. ఆస్తిక్యము × నాస్తిక్యము
18. మన జీవన లక్ష్యం
19. మన జీవన లక్ష్యం
20. యోగమంటే ఏమిటి ?
21. నూరేండ్ల వరకూ ఆరోగ్యంగా ఉండడం మెలా ?
22. శరీర దృఢత్వానికి, సంపూర్ణ ఆరోగ్యానికి, దీర్ఘ యువవుకు సాధారణ వ్యాయామాలు.
23. సత్యజ్ఞానం పొందడం మెలా ?
24. సత్సంగ మహిమ
25. మహర్షి దయానంద లేఖావళి
26. అసలు మహాత్ముదు
27. పంచ మహాయజ్ఞ విధి

१. चारों वेदों का हिन्दी भाष्य
२. सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी
३. सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी
४. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका
५. वैशेषिक, सांख्य, न्याय, बेदान्त दर्शन हिन्दी भाष्य स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती
६. युग निर्माता सत्यार्थ प्रकाश सन्दर्भ दर्पण
७. Vedic concept of Culture and Civilization
८. असल महात्मुडु स्वामी श्रद्धानन्द-तेलुगु
९. कालजयी सन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती
१०. धर्मवीर पं. लेखरामजी का जीवन चरित्र
११. मैने निजाम पर बम क्यों डाला ?
१२. बागी दयानन्द
१३. महर्षि दयानन्द की देन
१४. देवर्षि दयानन्द चरित
१५. बौद्धमत और वैदिक धर्म
१६. संक्षिप्त सत्यार्थ प्रकाश
१७. सत्यार्थ प्रकाश विमर्श
१८. आर्य मान्यताएँ
१९. वैदिक इतिहास विमर्श
२०. आस्तिकवाद
२१. चतुर्वेद शतकम्
२२. प्रार्थना-प्रवचन
२३. अतीत के यश की धरोहर
२४. सत्यार्थ सन्देश
२५. वेदान्त मीमांसा-सन्देश
२६. न्याय-वैशेषिक-सन्देश
२७. ऋग्वेद सन्देश
२८. बंगाल शास्तार्थ
२९. अपने आपको कैसे जानें और पढे
३०. संकल्प-सिद्धि
३१. प्रेरक-प्रसंग
३२. वीरांगना महारानी कैकेयी
३३. वेदों में इतिहास नहीं
३४. देव यज्ञ
३५. योग मार्ग
३६. सत्य सनातन वैदिक धर्म
३७. अभिवादन नमस्ते ही क्यों ?
३८. ज्योतिर्मय
३९. राष्ट्र रक्षा के वैदिक साधन
४०. ब्रह्मा कुमारी संस्था ढोल की पोल
४१. शराब बन्दी क्यों आवश्यक है ?
४२. आर्य समाज परिचय
४३. वैदिक सन्ध्या अग्निहोत्र विधि
४४. हैदराबाद का मुक्ति संग्राम
४५. आदर्श एवं बहुआयामी व्यक्तित्व के धनि लक्ष्मणराव गोजे
४६. पञ्च महायज्ञ विधि-तेलुगु

(नोट : तांबे के हवन कुण्ड और हवन पात्र बी उपलब्ध हैं)

आर्य प्रतिनिधि सभा ने मनाया हैदराबाद मुक्ति दिवस



हैदराबाद, 17 सितंबर-(मिलाप ब्यूरो) आर्य प्रतिनिधि सभा, आंध्र प्रदेश-तेलंगाना के तत्वावधान में आज कोठी चौराहे पर पं. नरेन्द्र की प्रतिमा के पास 68वाँ हैदराबाद मुक्ति दिवस मनाया गया।

संस्था के प्रधान विट्ठल राव आर्य ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। पं. प्रियदत्त शास्त्री के पौरोहित्य में देव यज्ञ से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। विट्ठल राव के राष्ट्रीय ध्वज फहराने के बाद राष्ट्रीय गीत का सामूहिक गायन हुआ। भाजपा नेता गोविंद राठी ने पं. नरेन्द्र की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। इसके बाद अपने संबोधन में राठी ने आर्य समाज के आंदोलन एवं निज़ाम शासन के विरुद्ध किये गये संघर्ष का वर्णन किया। पं. नरेन्द्र के साहसिक कार्यों का उल्लेख करते हुए गोविंद राठी ने उन्हें 'हैदराबाद का सरदार पटेल' कहा। अध्यक्षीय भाषण में विट्ठल राव आर्य ने 17 सितंबर को हैदराबाद मुक्ति दिवस मनाने का औचित्य स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि भारत को 15 अगस्त, 1947 को मिली आज़ादी पूर्ण नहीं थी। एक वर्ष बाद लौह पुरुष सरदार पटेल के साहसिक निर्णय के बाद की गई पुलिस कार्रवाई के फल स्वरूप 17 सितंबर, 1948 को हैदराबाद राज्य निज़ाम के निरंकुश शासन से मुक्त हुआ। यह दिन देश की पूर्ण आज़ादी का दिन रहा। तेलंगाना के लिए यह आज़ादी का दिन है। राज्य सरकार पर इसे सरकारी तौर पर मनाने का उत्तरदायित्व है, किन्तु राजनीतिक स्वार्थ के कारण वर्तमान सरकार इस मुद्दे पर निर्लिप्त व्यवहार कर रही है, जो सर्वथा अनुचित है। विट्ठल राव आर्य ने कहा कि हैदराबाद मुक्ति संग्राम में किये गये आंदोलनों में आर्य समाज की विशेष ऐतिहासिक भूमिका रही है। अनेक आर्य वीरों और नेताओं के त्याग और बलिदान के कारण हैदराबाद राज्य मुक्त हुआ। हैदराबाद मुक्ति दिवस को सरकारी तौर पर नहीं मनाये जाने पर आक्रोश व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने भविष्य में इस दिन को सरकारी तौर पर मनाने की पुरज़ोर माँग की। साथ ही कहा कि ऐतिहासिक तथ्यों से भावी पीढ़ी को अनभिज्ञ रखना बड़ा ही घातक है। सभा को उप-प्रधान डॉ. वसुधा शास्त्री, आचार्य अरविंद शास्त्री ने भी संबोधित किया। संचालन उप-मंत्री बी. सत्यनारायण ने किया। कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी तथा नगर के अनेक आर्य बंधुओं ने हिस्सा लिया।



విజయ దశమి ఊరేగింపు

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్ / తెలంగాణ
ఆర్య సమాజము కిషన్‌గంజ్ సంయుక్త ఆధ్వర్యమున
జంటనగరాల ఆర్యసమాజముల 89వ

విజయ దశమి ఊరేగింపు

శ్రీ దుర్ముఖినామ సంవత్సర ఆశ్వయుజ శు॥ దశమి మంగళవారం
తేది 11-10-2016 సాయంత్రం 4 గం॥లకు

శ్రీ మామిడి శ్రీనివాస్ గారు

(అధ్యక్షులు, ఆర్యసమాజము, సికింద్రాబాద్)
రథారూఢులై ఊరేగింపునకు నాయకత్వం వహిస్తారు.
ఊరేగింపు ప్రారంభమున ఆర్య సమాజము కిషన్‌గంజ్‌లో అభినందన సభ జరుగుతుంది.

विजय दशमी की शोभा यात्रा

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना
एवं
आर्य समाज किशनगंज, हैदराबाद
के संयुक्त तत्त्वावधान में नगर द्वय की आर्य समाजों की ऐतिहासिक ८९ वीं विजय दशमी की शोभा यात्रा
श्री दुर्मुखी नाम संवत्सर आश्विन शु. दशमी मंगलवार
दिनांक ११ अक्तूबर २०१६ को सायंकाल ४-०० बजे

श्री मामिड़ी श्रीनिवास जी

(प्रधान आर्य समाज सिकिन्द्राबाद)
रथारुढ़ होकर शोभायात्रा का नेतृत्त्व करेंगे ।
शोभा यात्रा के प्रारंभ में आर्य समाज किशनगंज में अभिनन्दन समारोह होगा ।

శ్రీ మామిడి శ్రీనివాస్ ఆర్య



జననము : 1932, స్థలము : హసమత్‌పేట్, సికింద్రాబాద్.
తల్లిదండ్రులు : శ్రీమతి వెంకటమ్మ - శ్రీ వీరయ్య గార్లు
విద్యాభ్యాసము : 1952లో మహబూబ్ కాలేజ్ 7వ తరగతి
వివాహము : 1966లో వివాహము జరిగినది.

ఆర్య సమాజ పరిచయము : 1955 నుండి బండారరి సత్యనారాయణ, అధ్యక్షులు మరియు బండారి శంకర్ రావు మిత్రుల ద్వారా దక్కన్ మానవ సేవాసమితి చేసిన గోవధ నిషేధ కార్యక్రమములో పాల్గొన్నారు. ఈ సమితికి మూడు సార్లు అధ్యక్షునిగా సేవ చేసారు. విశ్వ హిందూ పరిషత్ ఆధ్వర్యంలో ఛలో అయోధ్య కార్యక్రమములో 1000 మంది కరసేవకులకు నాయకత్వం వహించారు. ఆల్ కబీర్ గోహత్యానిషేధ కార్యక్రమములో పాల్గొని యజ్ఞము చేసి అరెస్టు కూడా అయ్యారు. వీరు ఆర్య సమాజము సికింద్రాబాద్ నుండి 1956-59 వరకు శ్రీమాన్ పండిత వెంకటేశ్వర్ శాస్త్రి గారితో విరాట్ పత్రిక యొక్క కంపోజర్‌గా పనిచేసారు. హస్మత్‌పేట్‌లో శ్రీ ఆంజనేయ యువజన సంఘం కె.వి. రంగారెడ్డి గారి ఆధ్వర్యంలో శ్రీ గణపతి పాండు, చుక్క నర్సింహ్మ గారి సహాయ సహకారాలతో 1955లో స్థాపించి అనేక సేవా కార్యక్రమాలు చేశారు. వాటిలో ముఖ్యమైనవి : హెల్త్ క్యాంపులు, వితంతువులకు జీవనాధారం చూపించుట, కుట్టు శిక్షణా కేంద్రములు నిర్వహించుట, వయోజనులకు వయోజన విద్య నిర్వహించుట, యువకులకు వ్యాయామశాల, కత్తి, కర్ర సాము, కబడ్డి నేర్పించినారు. వీరు హస్మత్‌పేట్ సంక్షేమ సంఘాన్ని స్థాపించి అధ్యక్షునిగా కొనసాగుతూ, దాదాపు 150 మంది పేదలకు ఇంటి స్థలాలు మంజూరు చేయించినారు, ఆర్య సమాజమునకు మంత్రి, కోషాధికారిగా మరియు వివిధ సేవలు చేసి ప్రస్తుతము ఆర్య సమాజము సికింద్రాబాద్ మరియు దీని ఆధ్వర్యంలో నడిచే హిందీ విద్యాలయము మరియు సరస్వతి కన్యా విద్యాలయములకు అధ్యక్షునిగా పనిచేయుచున్నారు.

ఈయన విద్యారాణి (ఇది కలం పేరు) అని కవితలు కూడారచించారు.

కాళోజి నారాయణ రావు, విశ్వనాథ సత్యనారాయణ, దాశరథి, వట్టికోట అల్వార్ స్వామి వీరి ద్వారా సాహిత్య సభలు నిర్వహించారు.

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 03-10-2016 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

To,

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక
Editor: **Vithal Rao Arya**, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 250/- **సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ**

Estd.1931



MAHARSHI DAYANAND SARASWATI
Founder of Arya Samaj

Reg. No. 6/52 Fasli (old) 1342/84 (New)

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. तेलंगाना, हैदराबाद

ARYA PRATINIDHI SABHA A.P. TELANGANA, HYDERABAD

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. తెలంగాణ, హైదరాబాద్.

20-09-2016

सूचना

सेवा में,
श्रीमान प्रधानजी / मंत्रीजी
आर्य समाज --------------------

नमस्ते ।

मान्यवर महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-हैदराबाद, तेलंगाना के संभावित चुनाव को दृष्टि में रखकर प्रांत की आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपनी-अपनी समाजों की साधारण सभा को आहूत कर दशाहरा-दीपावली तक समाजों के निर्वाचन सम्पन्न करवालें । साधारण सभा में आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए भेजे जाने वाले प्रतिनिधियों का भी निर्वाचन अवश्य कर लें । पहले 9 सभासदों पर एक प्रतिनिधि पश्चात प्रति 20 सभासदों पर (पूर्ण 20 पर) एक-एक प्रतिनिधि का निर्वाचन कर लें । अधिकतम प्रतिनिधियों की संख्या 5 रहेगी । साधारण सभा के साभासदों की सूचि तथा निवार्चन की कार्यवाही को मिनिट बुक में अवश्य अंकित करें । साधारण सभा आहूत करने की सूचना को भी सूचना पुस्तक में अंकित करें । ध्यान रहे कि सभासद को ही मत देने का अधिकार है । निर्वाचन में विलंब न करें । दीपावली तक अवश्य निर्वाचन सम्पन्न करवा लें । समस्यात्मक समाजों में सभा निर्वाचन करवाएगी यथा नार्थ लालागुड़ा, नलगोंडा, महबूबनगर, अशोक बाज़ार आदि ।

सूचनार्थ व आवश्यक कार्यवाही के लिए ।

धन्यवाद ।
भवदीय

हरिकिशन वेदालंकार
सभा मंत्री

विठ्ठलराव आर्य
सभा प्रधान

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor Vithal Rao Arya ● acharyavithai@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादकः श्री विट्ठलराव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.